INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC EXAM

HANDWRITTEN NOTES

2023

LATEST EDITION

SSC-CGL

STAFF SELECTION COMMISSION

COMBINED GRADUATE LEVEL

(Pre. + Mains के लिए)

भाग - 2

सामान्य जागरूकता (G.K.)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC-CGL

STAFF SELECTION COMMISSION

COMBINED GRADUATE LEVEL

Pre + Mains

भाग – 2

2023

सामान्य जागरूकता (G.K)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**SSC CGL (COMBINED GRADUATE LEVEL)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **कर्मचारी चयन आयोग (SSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**SSC CGL (COMBINED GRADUATE LEVEL)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/6z7do2

Online order करें - https://cutt.ly/9NCBSnA

मूल्य :	संस्करण : नवीनतम (2023)

संविधान

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 1
2. संविधान सभा 4
3. संविधान की विशेषताएं 6
4. संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र 10
5. भारतीय नागरिकता 11
6. मौलिक अधिकार 12
7. नीति निदेशक तत्व 15
8. राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति 17
9. भारतीय संसद (विधायिका) 22
10. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद 28
11. उच्चतम न्यायालय 29
12. राज्य कार्यपालिका 31
13. मुख्यमंत्री, राज्य महाधिवक्ता, राज्य विधानमण्डल 33
14. उच्च न्यायालय 40
15. पंचायती राज 43
16. निर्वाचन आयोग 48
17. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक 49
18. नीति आयोग 50
19. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग 52
20. संविधान संशोधन 53

भारत का भूगोल

1. सामान्य परिचय 54
2. भौतिक विभाजन 57
3. नदियाँ एवं झीलें 63
4. जलवायु 69
5. कृषि (agriculture) 71

6. मृदा / मिट्टी 79
7. प्राकृतिक वनस्पतियाँ 81
8. प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधनउद्योग (Industry) 84
9. उद्योग (Industry) 89
10. परिवहन तंत्र 94

विश्व भूगोल 99- 145

- ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल
- महाद्वीप एवं महत्वपूर्ण स्थान
- एशिया की प्रमुख नदियां
- एशिया की प्रमुख जल संधियां
- अफ्रीका महाद्वीप के प्रमुख पर्वत एवं पठार
- पर्वत (Mountains) एवं पठार
- विश्व के प्रमुख महासागर और सागर
- देशो की संसदों के नाम

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1. सिन्धु घाटी सभ्यता 146
2. वैदिक काल 149
3. बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव धर्म, 154
4. महाजनपद काल 159
5. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल 161
6. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल 165
7. कुषाण वंश एवं सातवाहन राजवंश 168

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण 170

2. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश 172
3. भक्ति एवं सूफी आंदोलन 182
4. बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य 186
5. मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.) 189

आधुनिक भारत का इतिहास

1. यूरोपीय कम्पनियों का आगमन 198
2. मराठा साम्राज्य 204
3. अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ 206
4. 1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन 213
5. भारत में राष्ट्रीय जागरण या आंदोलन 218
6. गाँधी युग और असहयोग आंदोलन 222
7. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक 228

भारतीय संस्कृति

1. भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक 232
2. भारतीय चित्रकला 234
3. भारतीय नृत्य कलाएँ 236
4. मुगलकालीन प्रमुख इमारतें 238

अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ 243
2. राष्ट्रीय आय और उत्पाद 244
3. मुद्रा एवं बैंकिंग 246
4. बजट एवं बजट निर्माण 249
5. कर TAX 251

6. केंद्र सरकार की योजनाएँ 252
7. गरीबी एवं बेरोजगारी 258

विविध 261-341

- महत्वपूर्ण दिवस
- विश्व के प्रमुख देश, राजधानी एवं उनकी मुद्राओं की सूची:
- पुस्तक एवं लेखक
- भारत में सर्वाधिक बड़ा, लम्बा एवं ऊँचा
- विश्व में सबसे बड़ा छोटा, लम्बा तथा ऊँचा
- भारत में प्रथम पुरुष
- भारत में प्रथम महिला
- भारत का निम्न क्षेत्रों में प्रथम एवं द्वितीय स्थान
- भारत में विभिन पुरस्कार एवं सम्मानित व्यक्ति
- विश्व के प्रमुख संगठन और उनके मुख्यालय
- आविष्कार-आविष्कारक
- भारत के प्रमुख खेल
- राष्ट्रीय खेल पुरस्कार
- भारत में विश्व धरोहर स्थल
- भारत के राज्यों के मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल
- भारत के राजकीय पशु पक्षी , वृक्ष और फूल की सूची
- भारत के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य
- केन्द्रीय मंत्रियों की सूची इस प्रकार है
- राज्यों की राजधानी और स्थापना दिवस
- केंद्र प्रदेशों और उनकी राजधानियों की सूची Union

- महारत्न कम्पनियों के निर्देशक
- राष्ट्रीय महिला नियुक्तियाँ
- विश्व के प्रमुख कम्पनियों के सीईओ (CEOs)
- शहरों / अभियानों के परिवर्तित नाम

- भारतीय एयरलाइन्स एवं उनके प्रमुख
- भारत में आए तूफान एवं चक्रवात
- अर्द्ध सैनिक बलों के प्रमुख
- राष्ट्रीय महिला नियुक्तियाँ
- विश्व के प्रमुख कम्पनियों के सीईओ (CEOs)
- महारत्न कम्पनियों के निर्देशक
- अर्द्ध सैनिक बलोंके प्रमुख
- शहरों / अभियानों के परिवर्तित नाम
- महोत्सव / सम्मेलन / बैठक
- प्रमुख ऑपरेशन
- भौगोलिक संकेत (GI Tags) प्राप्त उत्पाद

सामाजिक तथा आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना करते हुए लोक कल्याणकारी राज्य का मार्ग प्रसस्थ करना है।

मूल कर्तव्य

- मूल भारतीय संविधान में नागरिकों के कर्तव्यों से सम्बंधित भाग को सम्मिलित नहीं किया गया था।
- 42 वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा संविधान में एक नए भाग IV-A और इसके अंतर्गत एक नया अनुच्छेद 51(a) जोड़ा गया ।
- इसके द्वारा इस भाग में 10 मूल कर्तव्यों को सम्मिलित किया गया।
- 11वें मूल कर्तव्य को 86 वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 द्वारा जोड़ा गया ।
- इनकी प्रेरणा भूतपूर्व सोवियत संघ(USSR) के संविधान से ग्रहण की गयी ।
- सरदार स्वर्ण सिंह समिति की सिफारिशों के आधार पर ही 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 जिसे "मिनी कॉन्सटीट्यूशन" भी कहा जाता है, भारतीय संविधान में मूल कर्तव्यों को शामिल किया गया ।
- इसके तहत, विभिन्न अनुच्छेदों और यहाँ तक की प्रस्तावना में भी संशोधन किया गया ।
- सरदार स्वर्ण सिंह समिति द्वारा 8 मूल कर्तव्यों को जोड़े जाने और इनके अनुपालन न किये जाने पर दंड के प्रावधान की सिफारिश की गयी थी ।
- सर्वोच्च्य न्यायालय के मुख्य न्यायधीश P.N भगवती (1985 -86) को जनहित याचिका का जनक (father of PIL) कहा जाता है ।
- किसी व्यक्ति को राष्ट्रगान गाने के लिए बाध्य किया जा सकता है ऐसा सर्वोच्च्य न्यायालय ने विजय इमैनुअल बनाम केरल केरल राज्य (1986) मामले में ऐसा कहा ।
- मूल कर्तव्यों को मुख्यत : दो वर्गो -नैतिक कर्तव्य तथा नागरिक कर्तव्य में रखा गया है ।
- मूल कर्तव्य केवल नागरिकों पर लागू होते हैं ।

अध्याय – 8

राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति

राष्ट्रपति पद अर्हताएँ (अनुच्छेद 58)

- भारत का नागरिक हो ।
- न्यूनतम आयु 35 वर्ष हो ।
- वह लोक सभा का सदस्य निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो ।
- वह की लाभ के पद पर कार्यरत न हो ।
- वह पागल या दिवालिया न हो
- भारत में राष्ट्रपति का निर्वाचन अप्रत्यक्ष मतदान से (आनुपातिक प्रतिनिधित्व से एकल संक्रमणीय मत पद्धति द्वारा होता है ।

भारत के राष्ट्रपति के चुनाव में मतदान करने वाले सदस्य –

- राज्य सभा, लोक सभा और राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं ।
- भारत के राष्ट्रपति उम्मीदवार के प्रस्ताव का अनुसमर्थन कम से कम 50 निर्वाचको द्वारा होता है ।
- भारत में राष्ट्रपति का चुनाव एकल संक्रमणीय मत प्रणाली द्वारा होता है ।
- राष्ट्रपति के निर्वाचन में किसी राज्य का मुख्यमंत्री उस स्थिति में मतदान करने के लिए पात्र नही होगा यदि वह विधान मण्डल में उच्च सदन का सदस्य हो ।
- राज्यों की विधान सभायें राष्ट्रपति के निर्वाचक मण्डल का तो भाग है परंतु वह उसके महाभियोग में भाग नही लेता है ।

राष्ट्रपति की पदावधि (Term of Office)

- **अनु. 56** के अनुसार, राष्ट्रपति की पदावधि, उसके पद धारण करने की तिथि से पांच वर्ष तक होती है ।
- संविधान का अतिक्रमण करने पर अनुच्छेद 61 में वर्णित महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा उसे पदमुक्त किया जा सकता है ।
- अनु. 61(1) के तहत, महाभियोग हेतु एकमात्र आधार 'संविधान का अतिक्रमण' उल्लिखित है ।
- यदि राष्ट्रपति का पद उसकी मृत्यु, त्यागपत्र, निष्कासन अथवा किन्हीं अन्य कारणों से रिक्त हो तो उपराष्ट्रपति, नये राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा ।

- यदि उपराष्ट्रपति, का पद रिक्त हो, तो भारत का मुख्य न्यायाधीश (और यदि यह भी पद रिक्त हो तो उच्चतम न्यायालय का वरिष्ठतम न्यायाधीश) कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा ।
- पद रिक्त होने की तिथि से छह महीने के भीतर नए राष्ट्रपति का चुनाव करवाया जाना आवश्यक हैं । वर्तमान या भूतपूर्व राष्ट्रपति, संविधान के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए इस पद के लिए पुनर्निर्वाचन का पात्र होगा ।
- पद- धारण करने से पूर्व राष्ट्रपति को एक निर्धारित प्रपत्र पर भारत के मुख्य न्यायाधीश अथवा उनकि अनुपस्थिति में उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश के संम्मुख शपथ लेनी पड़ती है ।
- अनुच्छेद-77 के अनुसार भारत सरकार की समस्त कार्यपालिका करवाई राष्ट्रपति के नाम से की हुई खी जाएगी । और अनु. 77 (3) के अनुसार राष्ट्रपति भारत सरकार का कार्य अधिक सुविधापूर्वक किये जाने के लिए और मंत्रिओं में उक्त कार्य के आवंटन के लिए नियम बनाएगा ।

राष्ट्रपति से सम्बंधित महत्वपूर्ण अनुच्छेद
अनु.52 : भारत का राष्ट्रपति
अनु.53 : संघ की कार्यपालिका शक्ति
अनु.54 : राष्ट्रपति का निर्वाचक मण्डल
अनु.55 : राष्ट्रपति के निर्वाचन की रीति
अनु.56 : राष्ट्रपति की पदावधि
अनु.57 : पुनर्निर्वाचन के लिए पात्रता
अनु.58 : राष्ट्रपति निर्वाचित होने के लिए अर्हताएँ
अनु.59 : राष्ट्रपति पद के लिए शर्ते
अनु.60 : राष्ट्रपति द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
अनु.61 : राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाने की प्रक्रिया
अनु.62 : राष्ट्रपति का पद रिक्त होने की स्थिति में उसे भरने के लिए निर्वाचन करने का समय और आकस्मिक रिक्ति को भरने के लिए निर्वाचित व्यक्ति की पदावधि
अनु.72 : क्षमा आदि की और कुछ मामलों में दंडादेश के निलम्बन, परिहार या लघुकरण की राष्ट्रपति की शक्ति
अनु.73 : संघ की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार

राष्ट्रपति निम्न दशाओं में पांच वर्ष से पहले भी पद त्याग सकता है ।

- उपराष्ट्रपति को संबोधित अपने त्यागपत्र द्वारा यह त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को संबोधित किया जायेगा जो इसकी सूचना लोक सभा अध्यक्ष को देगा । अनु. 56 (2)
- महाभियोग द्वारा हटाये जाने पर अनु 61. महाभियोग के लिए केवल एक ही आधार है, जो अनु. 61 (1) में उल्लेखित है वह है संविधान का अतिक्रमण ।

राष्ट्रपति पर महाभियोग (अनु. 61) :-

- महाभियोग संसद मे संपन्न होने वाली एक अर्द्ध-न्यायिक प्रक्रिया है ।
- राष्ट्रपति को 'संविधान का अतिक्रमण' करने पर उसके पद से महाभियोग प्रक्रिया द्वारा हटाया जा सकता है ।
- राष्ट्रपति के विरुद्ध संविधान के अतिक्रमण का आरोप संसद के किसी भी सदन में प्रारंभ किया जा सकता हैं । एक सदन द्वारा इस प्रकार का आरोप लगाए जाने पर दूसरा सदन उस आरोप का अन्वेषण करेगा करवाएगा ।
- संकल्प को प्रस्तावित करने की सूचना पर सदन की कुल सदस्य संख्या के कम से कम एक चौथाई सदस्यों के हस्ताक्षर होंगे । इस हेतु 14 दिनों की अग्रिम सूचना देना आवश्यक हैं । संकल्प उस सदन की कुल सदस्य संख्या के कम से कम दो तिहाई बहुमत से पारित किया जाना चाहिए ।
- चूँकि संविधान राष्ट्रपति को हटाने का आधार और तरीका प्रदान करता है, अतः अनुच्छेद 56 और 61 की शर्तों के अनुरूप महाभियोग के अतिरिक्त उसे और किसी भी तरीके से नहीं हटाया जा सकता है ।

अन्य आकस्मिकताओं में राष्ट्रपति के कृत्यों का निर्वाचन अनु. 70

- जब राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति दोनों का पद रिक्त हो तो ऐसी आकस्मिकताओं में अनु.-70 राष्ट्रपति के कृत्यों का निर्वहन का उपबन्ध करता है । इसके अनुसार संसद जैसा उचित समझे वैसा उपबंध कर सकती है । इसी उद्देश्य से
- संसद ने राष्ट्रपति उत्तराधिकार अधिनियम, 1969 ई. पारित किया । जो यह उपबंधित करता है की यदि उपराष्ट्रपति भी किसी कारणवश उपलब्ध नही है तो उच्चतम न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश या उसके नही रहने पर उसी न्यायालय का वरिष्टतम

न्यायाधीश, जो उस समय उपलब्ध हो, राष्ट्रपति के कृत्यों को सम्पादित करेगा ।

- राष्ट्रपति का मासिक वेतन 5 लाख रूपए हैं ।
- राष्ट्रपति का वेतन आयकर से मुक्त होता हैं ।
- राष्ट्रपति को निःशुल्क निवास-स्थान व संसद द्वारा स्वीकृत अन्य भत्ते प्राप्त होते हैं ।
- राष्ट्रपति के कार्यकाल के दौरान उनके वेतन तथा भत्ते में किसी प्रकार की कमी नही की जा सकती हैं ।
- राष्ट्रपति के लिए 1 लाख रूपये वार्षिक पेंशन निर्धारित किया गया हैं ।

राष्ट्रपति के अधिकार एवं कर्तव्य :-

- भारत के प्रधानमंत्री की नियुक्ति करता हैं ।
- प्रधानमंत्री की सलाह पर मंत्रिपरिषद् के अन्य सदस्यों की नियुक्ति करता हैं ।
- सर्वोच्य न्यायालयों एवं उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों की नियुक्ति ।

➢ भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की नियुक्ति ।
➢ राज्यों के राज्यपालों की नियुक्ति ।
➢ मुख्य चुनाव आयुक्त एवं अन्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति ।
➢ भारत के महान्यायवादी की नियुक्ति ।
➢ राज्यों के मध्य समन्वय के लिए अन्तर्राज्यीय परिसद के सदस्य ।
➢ संघीय क्षेत्रों के मुख्य आयुक्तों ।
➢ संघीय लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष और अन्य सदस्यों ।
➢ वित्त आयोग के सदस्यों ।
➢ भाषा आयोग के सदस्यों ।
➢ पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्यों ।
➢ अल्प संख्यक आयोग के सदस्यों ।
➢ भारत के राजदूतों तथा अन्य राजनयिकों।
➢ अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में रिपोर्ट देने वाले आयोग के सदस्यों आदि ।
➢ राष्ट्रपति संसद का अभिन्न अंग होता हैं । इसे निम्न विधायी शक्तियां प्राप्त होती हैं ।
➢ संसद के सत्र को आहूत करने, सत्रावसान करने तथा लोकसभा भंग करने संबंधी अधिकार प्राप्त हैं ।
➢ संसद के एक सदन में या एक साथ सम्मिलित रूप से दोनों सदनों में अभिभाषण करने की शक्ति ।
➢ लोकसभा के लिए प्रत्येक साधारण निर्वाचन के पश्चात् प्रथम सत्र के प्रारम्भ में और और प्रत्येक वर्ष के प्रथम सत्र के आरम्भ में सम्मिलित रूप से संसद में अभिभाषण करने की शक्ति ।
➢ संसद द्वारा पारित विधेयक राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद ही कानून बनता हैं ।
➢ संसद में निम्न विधेयक को पेश करने के लिए राष्ट्रपति की पूर्व सहमति आवश्यक हैं । (A) नए राज्यों का निर्माण और वर्तमान राज्य के क्षेत्रों, सीमाओं या नामों में परिवर्तन संबंधी विधेयक । (B)**धन विधेयक अनु.110** (C)संचित निधि में व्यय करने वाले विधेयक **अनु.117** (3) (D)ऐसे काराधान पर, जिसमें राज्य-हित जुड़े हैं, प्रभाव डालने वाले विधेयक (E) राज्यों के बीच व्यापार, वाणिज्य और समागम पर निर्बन्धन लगाने वाले विधेयक **अनु.-304**
➢ यदि किसी साधारण विधेयक पर दोनों सदनों में कोई असहमति हैं तो उसे सुलझाने के लिए राष्ट्रपति दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुला सकता हैं **अनु.108** के तहत ।
➢ किसी अनुदान की मांग राष्ट्रपति की सिफारिश पर ही की जाएगी, अन्यथा नही **अनु.113**
➢ जब राष्ट्रपति को यह लगे की लोकसभा में आंग्ल भारतीय समुदाय के व्यक्तियों का समुचित प्रतिनिधित्व नही है, तब वह समुदाय के दो व्यक्तियों को लोकसभा के सदस्य के रूप में नामांकित कर सकता हैं **अनु.331** के तहत ।
➢ इसी प्रकार वह कला, साहित्य पत्रकारिता, विज्ञान तथा सामाजिक कार्यों में पर्याप्त अनुभव एवं दक्षता रखने वाले 12 व्यक्तियों को राज्य सभा में नामजद कर सकता हैं **अनु.80 (3)** के तहत
➢ राष्ट्रपति संसद के स्थगन के समय **अनु. 123** के तहत अध्यादेश जारी कर सकता हैं ।
➢ सैन्य बलों की सर्वोच्य शक्ति राष्ट्रपति के पास होती हैं । किन्तु इसका वास्तविक प्रयोग विधि द्वारा नियमित होता हैं ।
➢ दूसरे देशों के साथ कोई भी समझौता या संधि राष्ट्रपति के नाम से की जाती हैं । राष्ट्रपति विदेशों के लिए भारतीय राजदूतों की नियुक्ति करता हैं एवं भारत में विदेशों के राजदूतों की नियुक्ति का अनुमोदन करता हैं ।
➢ संविधान के अनु.-72 के अंतर्गत राष्ट्रपति को किसी अपराध के लिए दोषी ठहराये गए किसी व्यक्ति के दण्ड को क्षमा करने, उसका प्रविलंबन, परिहार और लघुकरण की शक्ति प्राप्त हैं ।
➢ आपातकाल से संबंधित उपबंध भारतीय संविधान के भाग -18 के **अनु.-352 से 360** के अंतर्गत मिलता

है। मंत्रिपरिषद् के परामर्श से राष्ट्रपति तीन प्रकार के आपात लागू कर सकती है।

- (A)- युद्ध या बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह के कारण लगाया गया आपात **(अनु.-352)**
- (B)- राज्यों में संविधानिक तंत्र के विफल होने से उत्पन्न आपात **अनु.-356 अर्थात राष्ट्रपति शासन ।**
- **(C)**-वित्तीय आपात **अनु.-360** (न्यूनतम अवधि- दो माह)
- राष्ट्रपति किसी सार्वजानिक महत्व के प्रशन पर उच्चतम न्यायालय से **अनुच्छेद 143** के अधीन परामर्श ले सकता है। लेकिन वह यह परामर्श मानने के लिए बाध्य नही है।
- भारत में राष्ट्रपति के द्वारा संघ वित्त आयोग की सिफारिशों नियंत्रक –महालेखा परीक्षक के प्रतिवेदन, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग एवं राष्ट्रीय जनजाति आयोग के प्रतिवेदन को संसद के पटल पर रखवाया जाता है।
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। वे लगातार दो बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।
- डॉ. एस. राधाकृष्णन लागातार दो बार उपराष्ट्रपति तथा एक बार राष्ट्रपति रहे।
- केवल वी.वी. गिरी के निर्वाचन के समय दूसरे चक्र की मतगणना करनी पड़ी।
- केवल नीलम संजीव रेड्डी ऐसे राष्ट्रपति हुए जो एक बार चुनाव में हार गए, फिर बाद में निर्विरोध राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।
- भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल है।

भारत के राष्ट्रपति		
क्र.स.	नाम	कार्यकाल
1	डॉ. राजेंद्र प्रसाद	26.01.1950 से 13.05.1962
2	डॉ.एस.राधाकृष्णन	13.05.1962 से 13.05.1967
3	डॉ.जाकिर हुसैन	13.05.1967 से 03.05.1969
4	वी. वी. गिरि	24.08.1969 से 24.08.1974
5	फखरुद्दीन अली अहमद	24.08.1974 से 11.02.1977
6	नीलम संजीव रेड्डी	25.07.1977 से 25.07.1982
7	ज्ञानी जैल सिंह	25.07.1982 से 25.07.1987
8	आर. वेंकटरमण	25.07.1987 से 25.07.1992
9	डॉ. शंकर दयाल शर्मा	25.07.1992 से 25.07.1997
10	के. आर. नारायण	25.07.1997 से 25.07.2002
11	डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम	25.07.2002 से 25.07.2007
12	प्रतिभा पाटिल	25.07.2007 से 25.07.2012
13	प्रणव मुखर्जी	25.07.2012 से 25.07.2017
14	राम नाथ कोविंद	25.07.2017 से ---- 25.07.2022
15	श्रीमती द्रौपदी मुर्मू	25.07.2022 से निरंतर ..

- वी.वी. गिरि 3 मई 1969 से 20 जुलाई 1969 ई. तक न्यायमूर्ति मुहम्मद हिदायतुल्ला 20 जुलाई 1969 से 24 अगस्त 1969 ई. तक एवं बी. डी.जत्ती ।। फरवरी 1977 से 25 जुलाई 1977 ई. तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के पद पर रहे।

उपराष्ट्रपति (vicepresident) (अनुच्छेद 63-70)

- संविधान में उपराष्ट्रपति से संबंधित प्रावधान अमेरिका के संविधान से लिया ग्रहण किया गया है।
- **art-63** के अनुसार भारत का एक उपराष्ट्रपति होगा ।
- **अनु.-64 एवं अनु -89 के अनुसार** भारत का उपराष्ट्रपति राज्य सभा का पदेन सभापति होता है।
- वेतन राज्यसभा के सभापति के रूप में मिलता है।
- उपराष्ट्रपति राज्य सभा का सदस्य नहीं होता है। अतः इसे मतदान का अधिकार नहीं है किन्तु सभापति के रूप में निर्णायक मत देने का अधिकार उसे प्राप्त है।
- **art-65** के अनुसार राष्ट्रपति के पद की आकस्मिक रिक्त के दौरान या उसकी अनुपस्थिति में राष्ट्रपति के

अधिवेशनों की तिथि तय करना तथा उसके लिए कार्य सूची बनाना भी मुख्यमंत्री का ही अधिकार है।

- मंत्रिपरिषद के निर्णयों की राज्यपाल को सूचना देना मुख्यमंत्री का संवैधानिक कर्तव्य है (अनुच्छेद 167)।
- मुख्यमंत्री मंत्रिपरिषद का ही नहीं बल्कि राज्य विधानमण्डल का भी नेता माना जाता है।
- विधानमंडल में महत्त्वपूर्ण निर्णयों की घोषणा मुख्यमंत्री ही करता है।
- विधानसभा को स्थगित और भग किये जाने का निर्णय भी मुख्यमंत्री द्वारा ही किया जाता है।
- मुख्यमंत्री राज्यपाल को शासन संबंधी प्रत्येक मामले में परामर्श देता है।
- संविधान के अनुसार राज्यपाल उस समय मुख्यमंत्री का परामर्श नहीं लेता जब वह केंद्रीय सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। अन्य स्थितियों में राज्यपाल मुख्यमंत्री के परामर्श के अनुसार कार्य करता है।
- राज्य में सभी महत्त्वपूर्ण नियुक्तियाँ राज्यपाल, मुख्यमंत्री के परामर्श के अनुसार ही कार्य करता है। अत: मुख्यमंत्री ही राज्य का वास्तविक शासक होता है।
- राज्य का राज्यपाल, उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के लिए अर्हित किसी व्यक्ति को राज्य का महाधिवक्ता नियुक्त करेगा (अनुच्छेद 165)।
- उल्लेखनीय है कि महाधिवक्ता राज्यपाल के प्रसादपर्यन्त पद धारण करेगा और ऐसा पारिश्रमिक प्राप्त करेगा, जो राज्यपाल निर्धारित करे।
- राज्य के महाधिवक्ता को यह अधिकार होगा कि वह उस राज्य की विधानसभा (Legislative Assembly) में या विधानपरिषद वाले राज्य की दशा में दोनों सदनों में बोले और उनकी कार्यवाहियों में अन्यथा भाग ले, किन्तु उसे मतदान का अधिकार नहीं होगा (अनुच्छेद 177)।

राज्य विधानमण्डल

- संरचना संविधान के अनुच्छेद 168 (अध्याय-III) के अंतर्गत प्रत्येक राज्य हेतु एक विधानमण्डल की व्यवस्था की गई है।
- इसी अनुच्छेद के अनुसार राज्य विधान-मंडल में राज्यपाल के अतिरिक्त विधानमंडल के एक या दोनों सदन शामिल हैं।
- वर्तमान में बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में द्वि-सदनीय विधानमंडल और शेष राज्यों में एकसदनीय विधानमंडल की व्यवस्था है।
- जम्मू-कश्मीर राज्य में भी विधान परिषद है परंतु इसकी व्यवस्था भारतीय संविधान द्वारा नहीं, जम्मू-कश्मीर राज्य के अपने संविधान द्वारा की गई है।
- जिन राज्यों में दो सदन हैं वहाँ एक को विधानसभा तथा दूसरे को विधान परिषद कहते हैं। जिन राज्यों में एक सदन हे उसका नाम विधानसभा है।

राज्य व्यवस्थापिका की भूमिका -

- राज्य की राजनीतिक व्यवस्था में राज्य व्यवस्थापिका (State Legislature) की केन्द्रीय एवं प्रभावी भूमिका होती है।
- संविधान के छठे भाग में अनुच्छेद 168 से 212 तक राज्य विधानमण्डल का संगठन, कार्यकाल, अधिकारियों, शक्तियों एवं विशेषाधिकार आदि के बारे में बताया गया है। है।

विधानमण्डल में दो सदन हैं उच्च सदन विधानपरिषद और निम्न सदन विधानसभा कहलाती है।

- वर्तमान में केवल सात राज्यों-कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश व जम्मू-कश्मीर में विधानपरिषद है।
- संविधान के अनुच्छेद 171 के अनुसार, किसी राज्य की विधान परिषद के सदस्यों की संख्या उस राज्य की विधानसभा के सदस्यों की संख्या के एक-तिहाई से अधिक और किसी भी स्थिति में 40 से कम नहीं हो सकती ।
- भारतीय संसद कानून द्वारा विधान परिषद् की रचना के संबंध में संशोधन कर सकती है।
- अनुच्छेद 173 के अनुसार, विधानपरिषद के सदस्यों के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ निर्धारित की गई हैं।

  1. वह भारत का नागरिक हो।
  2. संसद द्वारा निश्चित अन्य योग्यताएँ रखता हो।
  3. 30 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
  4. किसी न्यायालय द्वारा पागल या दिवालिया न घोषित किया गया हो।
  5. संसद द्वारा बनाए गए किसी कानून के अनुसार विधानसभा के लिए अयोग्य न हो। साथ ही राज्य विधानमण्डल का सदस्य होने की पात्रता हेतु उसका नाम राज्य के किसी विधानसभा क्षेत्र की निर्वाचक नामावली में होना चाहिए।

- विधानपरिषद् एक स्थायी सदन है।

- इसके सदस्य 6 वर्ष के लिए चुने जाते हैं।
- प्रत्येक 2 वर्ष पश्चात् 1/3 सदस्य अवकाश प्राप्त कर लेते हैं और उनके स्थान पर नए सदस्य चुने जाते हैं,
- यदि कोई व्यक्ति मृत्यु या त्याग-पत्र द्वारा हुई आकस्मिक रिक्ति को भरने के लिए निर्वाचित होता है, तो वह उस व्यक्ति या सदस्य की शेष अवधि के लिए ही सदस्य होगा।

राज्य विधानमण्डल

साधारण

- **अनुच्छेद 168** राज्यों के विधानमण्डलों का गठन
- **अनुच्छेद 169** राज्यों में विधान परिषदों का उत्पादन एवं सृजन
- **अनुच्छेद 170** विधानसभाओं की संरचना
- **अनुच्छेद 171** विधान परिषदों की संरचना
- **अनुच्छेद 172** राज्यों के विधानमण्डलों की अवधि
- **अनुच्छेद 173** राज्य के विधानमण्डल की सदस्यता के लिए अर्हता
- **अनुच्छेद 174** राज्य के विधानमण्डल के सत्र, सत्रावसान और विघटन
- **अनुच्छेद 175** सदन या सदनो में अभिभाषण का और उनको सन्देश भेजने का राज्यपाल का अधिकार
- **अनुच्छेद 176** राज्यपाल का विशेष अभिभाषण
- **अनुच्छेद 177** सदनों के बारे में मन्त्रियों और महाधिवक्ता के अधिकार

राज्य के विधानमण्डल के अधिकारी

- **अनुच्छेद 178** विधानसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष
- **अनुच्छेद 179** अध्यक्ष आर उपाध्यक्ष का पद रिक्त होना पदत्याग और पद से हटाया जाना
- **अनुच्छेद 180** अध्यक्ष के पद के कर्तव्यों का पालन करने या अध्यक्ष के रूप में कार्य करने की उपाध्यक्ष या अन्य व्यक्ति की शक्ति
- **अनुच्छेद 181** जब अध्यक्ष या उपाध्यक्ष को पद से हटाने का कोई संकल्प विचाराधीन है तब उसका पीठासीन न होना।
- **अनुच्छेद 182** विधानपरिषद् का सभापति व उपसभापति
- **अनुच्छेद 183** सभापति आर उपसभापति का पद रिक्त होना पदत्याग और पद से हटाया जाना ।
- **अनुच्छेद 184** सभापति के पद के कर्तव्यों का पालन करने या सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति या अन्य व्यक्ति की शक्ति
- **अनुच्छेद 185** जब सभापति या उपसभापति को पद से हटाने का कोई संकल्प विचाराधीन है तबउसका पीठासीन न होना ।
- **अनुच्छेद 186** अध्यक्ष और उपाध्यक्ष तथा सभापति और उपसभापति के वेतन और भत्ते ।
- **अनुच्छेद 187** राज्य के विधानमण्डल का सचिवालय कार्य-संचालन
- **अनुच्छेद 188** सदस्यों का शपथ या प्रतिज्ञान
- **अनुच्छेद 189** सदनों में मतदान, रिक्तियों के होते हुए भी सदनों की कार्य करने की शक्ति एवं गणपूर्ति

सदस्यों की निरर्हताएँ -

- **अनुच्छेद 190** स्थानों का रिक्त होना
- **अनुच्छेद 191** सदस्यता के लिए निरर्हताएँ
- **अनुच्छेद 192** सदस्यों की निरहर्ताओं से सम्बन्धित प्रश्नों पर विनिश्चय
- **अनुच्छेद 193** अनुच्छेद 188 के अधीन शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले या अर्हित न होते हुए या निरहित । किए जाने पर बैठने और मत देने के लिए शक्ति ।

राज्यों के विधानमण्डलों और उनके सदस्यों की शक्तियाँ, विशेषाधिकार और उन्मुक्तियाँ।

- **अनुच्छेद 194** विधानमण्डलों के सदनों की तथा उनके सदस्यों और समितियों की शक्तियों, विशेषाधिकार आदि
- **अनुच्छेद 195** सदस्यों के वेतन और भत्ते

विधायी प्रक्रिया

- **अनुच्छेद 196** विधेयकों के पुनःस्थापन और पारित किए जाने के सम्बन्ध में उपबन्ध
- **अनुच्छेद 197** धन विधेयकों से भिन्न विधेयकों के बारे में विधान परिषद् की शक्तियों पर निबंधन
- **अनुच्छेद 198** धन विधेयकों के सम्बन्ध में विशेष प्रक्रिया
- **अनुच्छेद 199** "धन विधेयक" की परिभाषा
- **अनुच्छेद 200** विधेयकों पर अनुमति
- **अनुच्छेद 201** विचार के लिए आरक्षित विधेयक वित्तीय विषयों के सम्बन्ध में प्रक्रिया
- **अनुच्छेद 202** वार्षिक वित्तीय विवरण अनुच्छेद

- ***अनुच्छेद 203*** *विधानमण्डल में प्राक्कलनों के सम्बन्ध में प्रक्रिया*
- ***अनुच्छेद 204*** *विनियोग विधेयक अनुच्छेद*
- ***अनुच्छेद 205*** *अनुपरक, अतिरिक्त या अधिक अनुदान*
- ***अनुच्छेद 206*** *लेखानदान, प्रत्ययानूदान और अपवादानुदान*
- ***अनुच्छेद 207*** *वित्त विधेयकों के बारे में विशेष उपबन्ध*

साधारण प्रक्रिया

- ***अनुच्छेद 208*** *प्रक्रिया के नियम*
- ***अनुच्छेद 209*** *राज्य के विधानमण्डल में वित्तीय कार्य सम्बन्धी प्रक्रिया का विधि द्वारा विनियमन*
- ***अनुच्छेद 210*** *विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा*
- ***अनुच्छेद 211*** *विधानमण्डल में चर्चा पर निबंधन*
- ***अनुच्छेद 212*** *न्यायालयों द्वारा विधानमण्डल की कार्यवाहियों की जाँच न किया जाना*
- ***अनुच्छेद 213*** *विधानमण्डल के विश्रान्ति काल में अध्यादेश प्रख्यापित करने की राज्यपाल की शक्ति*

राज्य विधानमण्डलों की शक्तियों पर प्रतिबन्ध

राज्य के विधानमण्डलों पर निम्नलिखित प्रतिबन्ध संविधान ने आरोपित किए है ।

- *राज्य सूची के कुछ विषयों पर राज्यों के विधानमण्डल राष्ट्रपति की पूर्वानुमति के बिना कानून नहीं बना सकते ।*
- *कुछ विषयों से जुडे हुए कानून राज्य विधानमण्डल द्वारा निर्मित कानून सम्बन्धित राज्य के राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति की स्वीकृति हेतु भेजे जाते हैं। राष्ट्रपति की स्वीकृति के पश्चात् ही यह कानून प्रवर्तनीय होगा।*
- *आपातकालीन परिस्थितियों में संसद राज्य सूची के विषयों पर भी कानून बनाने के लिए स्वतन्त्र है।*

किन्ही कारणों में राज्य में संवैधानिक तन्त्र विफल होने की स्थिति (Failure of Constitutional Machinery in States) में राष्ट्रपति उक्त राज्य को विधानसभा को भंग कर सकता है, ताकि वहाँ नए चुनाव कराए जा सके।

विधानपरिषद एवं विधानसभा तुलनात्मक अध्ययन

विधानपरिषद् -

विधानपरिषद्	***विधानसभा***
विधानपरिषद् राज्य विधानमंडल का उच्च या द्वितीय सदन होता हैं	*विधानसभा राज्य विधानमंडल का निम्न अथवा प्रथम सदन होता हैं*
विधानपरिषद् के सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रूप से आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत प्रणाली के आधार पर किया जाता हैं	*विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से वयस्क मताधिकार के आधार पर साधारण बहुमत की मत प्रणाली के आधार पर होता है।*
विधानपरिषद् एक स्थायी निकाय हैं, जिसका विघटन नही किया जा सकता, परन्तु एक तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष के समाप्ति के बाद सेवानिवृत्त हो जाते हैं तथा इनके स्थान पर नये सदस्य निर्वाचित हो जाते हैं इसके सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता हैं	*विधानसभा का कार्यकाल 5 वर्ष का होता हैं । परन्तु कार्यकाल पूर्ण होने के पूर्व मुख्यमंत्री के परामर्श पर राज्यपाल द्वारा इसे भंग किया जा सकता हैं ।*
विधानपरिषद् के सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक राज्य के विधानसभा के सदस्यों के संख्या के एक तिहाई होती हैं, परन्तु वह 40 से कम किसी अवस्था में नही हो सकती (अपवाद जम्मू- कश्मीर 36 सीट)	*विधानसभा के सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक 500 तथा कम-से-कम 60 हो सकती हैं । (अपवाद –गोवा-40, मिजोरम-40, सिक्किम-32, पुदुचेरी- 30)*
विधानपरिषद् राज्य के कुछ विशेष वर्गों का प्रतिनिधित्व करता हैं	*विधानसभा राज्य के समस्त जनता का प्रतिनिधित्व करती हैं ।*

अध्याय – 3

नदियाँ एवं झीलें

- **नदियाँ**

भारतीय अपवाह तंत्र

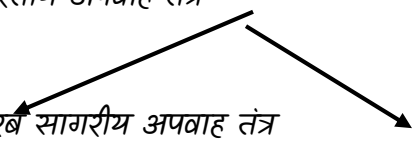

अरब सागरीय अपवाह तंत्र
बंगाल की
खाड़ी का

- **अपवाह तंत्र** किसी नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को कहते हैं।
- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं। बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं। अपना जल अरब सागर में गिराती हैं।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं।
- इन्ही नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- इंड़ो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते है, कि मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी। जिसे शिवालिक या इंड़ो - ब्रह्म नदी कहा गया हैं।
- इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -
- 1.पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
- 2.मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
- 3.पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

भारतीय नदी प्रणाली

1. सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु जल संधि 1960 में हुई थी।
- तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियत्रण भारत के पास हैं।
- तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया हैं।

1.व्यास, रावी, सतलुज < 80% पानी भारत
20% पानी पाकिस्तान

2.सिन्धु, झेलम, चिनाब < 80% पानी पाकिस्तान
20% पानी भारत

सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं।
- भारत में सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं।
- सिन्धु नदी की कुल लम्बाई 2,880 किमी. हैं।
- भारत में सिन्धु नदी की लम्बाई केवल 1,114 km हैं।
- भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित हैं। तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं।

- **सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।**
- अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल।
- सिन्धु नदी, कराची (पाकिस्तान) के निकट अरब सागर में जाकर गिरती है।
- यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती हैं। जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती है।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती हैं।

- पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है ।
- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार हैं ।
- तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, ह्वांगहो (पीली नदी, पीत), इरावदी, मेकांग एवं सतलज ।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता है ।
- यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती है । तथा कठोर चट्टानी भागो से होकर बहती हैं ।
- यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती हैं ।

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं ।
- यह तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर झील के निकट राक्षस ताल झील से निकलती हैं ।
- वहाँ इसे लॉंगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है ।
- सतलज नदी का संगम स्थल कपूरथला के द.- प. सिरे पर व्यास नदी में तथा मिठानकोट के निकट सिन्धु नदी में है ।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंड़ो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती है ।
- सतलज नदी की सहायक नदियाँ है -सिप्ती, वास्पा, व्यास
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती हैं ।
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं । यह भाखड़ा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती है तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती हैं ।

व्यास नदी (विपाशा नदी) :-

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है ।
- यह रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड़ से निकलती है ।
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है ।
- यह धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड़ का निर्माण करती है ।
- यह हरिके बेराज के पास सतलज नदी में जाकर मिल जाती है ।
- पार्वती, सैन्ज, तीर्थन, ऊहल इसकी सहायक नदियाँ है ।

रावी नदी (परूष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिन्धु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है।
- जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती हैं ।
- अंत में ये झांग जिले की सीमा पर चिनाब नदी में मिल जाती हैं ।

चिनाब नदी (अस्किनी)

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है ।
- यह लाहुल में बरालाचाला दर्रे के विपरीत दिशा में चंद्रा और भाग नामक दो सरिताओं के मिलने से बनती है ।
- ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांड़ी में आपस में मिलती हैं ।
- इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1180 किमी हैं ।
- यह त्रिमू के निकट झेलम नदी में जाकर मिलती है ।

झेलम नदी (वितस्ता)

- यह सिन्धु की सहायक नदी है ।
- जो कश्मीर घाटी के दक्षिण-पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखण्ड से गुजरती है ।

- बिहार में निर्मित त्रिवेणी नहर में गंडक नदी से पानी आता है।
- **कोसी नदी** - इसका स्त्रोत तिब्बत में माउंट एवरेस्ट के उत्तर में है जहाँ से इसकी मुख्य धारा अरुण निकलती है। कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है।
- इसका संगम स्थल भागलपुर जनपद में काढ़ागोला के दक्षिण-पश्चिम में गंगा नदी में है।
- इसकी सहायक नदियाँ है – सनकोसी, तामू कोसी, लिक्षु कोसी, तलखु, दूध कोसी, अरुण, तामुर कोसी।
- **ब्रह्मपुत्र नदी** – ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम हिमालय के उत्तर में स्थित मानसरोवर झील के निकट चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है।
- तिब्बत में ब्रह्मपुत्र को सांग्पो (Tsangpo) के नाम से जाना जाता है। नामचा बरवा के निकट हिमालय को काटकर तथा "U" टर्न बनाते हुए गहरे गार्ज (महाखंड) का निर्माण करती है और दिहांग के नाम से भारत में प्रवेश करती है। कुछ दूर तक दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहने के बाद इसकी दो प्रमुख सहायक नदियाँ दिवांग और लोहित इसके बाएँ किनारे पर आकर मिलती है। इसके बाद इस नदी को ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है।
- इसकी अन्य सहायक नदियाँ धनसरी, सुबनसिरी, मानस, कामेग व संकोश, पगलादिया आदि है।
- ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लम्बाई 2900 किमी है, जिसमें 916 किमी. भारत में बहती है।
- असम के धुबरी के निकट ब्रह्मपुत्र दक्षिण दिशा में बहती हुई बांग्लादेश में प्रवेश करती है। बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र को जमुना के नाम से जाना जाता है।
- जमुना में दाहिनी ओर से तिस्ता नदी आकर मिलती है। जमुना आगे जाकर पदमा में मिल जाती है तथा पदमा मेघना से मिलने के बाद, मेघना नाम से बंगाल की खाड़ी में गिरती है। असम घाटी में ब्रह्मपुत्र नदी गुंफित जल मार्ग बनाती है, जिसमें माजुली जैसे कुछ बड़े नदी द्वीप भी मिलते है।
- हिमालयी नदी तंत्र की तुलना में प्रायद्वीप नदी तंत्र अधिक पुराना है।
- पश्चिमी घाट बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों व अरब सागर में गिरने वाली नदियों के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- प्रायद्वीपीय भारत की नदियों की प्रौढ़वस्था व नदी घाटियों का चौड़ा व उथला होना इसके प्राचीन होने का प्रमाण है।
- प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिम से पूर्व दिशा में बहती है।
- नर्मदा एवं ताप्ती इनके विपरीत बहती है।
- हिमालय के उत्थान के साथ नर्मदा व ताप्ती नदियों का भ्रंश घाटियों का निर्माण हुआ है।

प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदियाँ

1. महानदी 2. गोदावरी 3. कृष्णा
4. कावेरी 5. नर्मदा 6. ताप्ती

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

महानदी –

- इसकी कुल लम्बाई लगभग 851 किलोमीटर है
- यह छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में सिहावा के पास से निकलती है।
- ओड़िशा में बहते हुए बंगाल की खाड़ी मे गिरती है
- महानदी की द्रोणी का अपवाह महाराष्ट्र छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखण्ड मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र में है।
- शिवनाथ मांड और ईब बाएँ तट से तथा केन दाएँ तट से मिलने वाली महानदी की प्रमुख सहायक नदी है।

गोदावरी नदी –

- यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लम्बी नदी (1465 किलोमीटर) है
- इसका अपवाह तंत्र प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में सबसे बड़ा है।
- गोदावरी नदी नासिक महाराष्ट्र से निकलती है।
- तेलंगाना व आंध्र मे बहते हुए राजमुंदरी के पास कई धाराओं में विभक्त होकर डेल्टा का निर्माण करती है।
- इसे दक्षिण गंगा तथा वृद्ध गंगा के नाम से जाना जाता है।
- इसकी द्रोणी का अपवाह महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश व मध्यप्रदेश में है
- इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है पूर्णा पेनगंगा, वेनगंगा, इन्द्रावती (बाएँ तट से) मंजिरा (दक्षिण तट से) उड़ीसा से निकलती है व बस्तर के पठार (छत्तीसगढ़) मे बहते हुए गोदावरी से मिलती है।

- **दामोदर नदी** -दामोदर नदी झारखण्ड में स्थित छोटा नागपुर पठार से निकलती है तथा भ्रंश घाटी में बहते हुए पश्चिम बंगाल में बहने वाली हुगली नदी से मिलती है। बराकर दामोदर नदी की एक प्रमुख

सहायक नदी है । इससे बंगाल का शोक भी कहते हैं।

- **स्वर्ण रेखा नदी** – यह रांची (झारखण्ड) के दक्षिण पश्चिम से निकलती है तथा झारखंड, पश्चिम बंगाल व उड़ीसा में बहते हुए यह अपना जल बंगाल की खाड़ी मे गिराती है। जमशेदपुर नगर इसी नदी के किनारे बसा हुआ है।
- **बैतरणी नदी**-यह उड़ीसा के क्योंझर जिले से गुप्तगंगा पहाड़ियों से निकलती है तथा बंगाल की खाड़ी में जल गिराती है।

- **ब्राहमणी नदी** -यह रांची के पास कोयल व शंख दो नदियों के निकलने के बाद राउरकेला में मिलने से ब्राह्मणी नदी कहलाती है।

- **कृष्णा नदी**-
- यह प्रायद्वीपीय भारत की दूसरी सबसे लम्बी नदी (1401 km) है।
- यह सह्याद्रि (महाराष्ट्र) में महाबलेश्वर चोटी से से निकलती है ।
- कर्नाटक, तेलगाना व आन्ध्र प्रदेश में बहते हुए बंगाल की खाड़ी मे गिरती है यह भी डेल्टा का निर्माण करती है (विजयवाड़ा के निकट)
- इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है कोयना, पचगंगा, घाटप्रभा, मालप्रभा, दूधगंगा, मूसीभीमा व तुगभद्रा (तुंगा + भद्रा)

- **पेन्नार नदी** - यह कर्नाटक के नंदी दुर्ग पहाड़ी से निकलती है तथा आंध्र प्रदेश में बहते हुए बंगाल की खाडी में गिरती है।

- **कावेरी नदी** –
- यह कर्नाटक राज्य के कोडागु जिलें की ब्रह्मगिरी की पहाड़ियों से निकलती है ।
- तमिलनाडु में बहते हुए बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है यह डेल्टा का निर्माण करती है ।
- इस नदी की कुल लम्बाई 800 किमी. है
- इस नदी की द्रोणी का 3% भाग केरल में 41% कर्नाटक में व 56% भाग तमिलनाडु में पड़ता है।
- इसके ऊपरी जल ग्रहण क्षेत्र में (कर्नाटक) दक्षिण - पश्चिम मानसून (गर्मी) से व निम्न क्षेत्रों में (तमिलनाडु) उत्तर पूर्वी मानसून (सर्दी) से वर्षा प्राप्त होती है।
- कावेरी नदी को "दक्षिण भारत की गंगा" के नाम से भी जाना जाता है।

प्रमुख सहायक नदियाँ हैं - सुवर्णावती, भवानी, अमरावती, कबीनी (दाहिने तट पर)हेरगी, हेमावती, अक्रावती (बांये तट पर)

वैंगाई नदी- यह तमिलनाडु के वरशानद पहाड़ी से निकलती तथा मदुरई शहर से बहते और पाक की खाड़ी में गिरती है।

ताम्रपाणी नदी - यह पालनी की पहाड़ियों से (अन्नामलाई पहाड़ियों का क्रमिक विस्तार) से निकलती है तथा अपना जल मन्नार की खाड़ी में गिराती है।

अरब सागर में गिराने वाली नदियाँ

शेतरुनीजी नदी - गुजरात के अमरावली जिले में डलकाहवा से निकलती है तथा अपना जल खम्भात की खाड़ी में गिराती है।

नर्मदा नदी –

- यह मध्य प्रदेश के मैकाल पर्वत पर स्थित अमरकंटक चोटी से निकलती है ।
- दक्षिण में सतपुड़ा व उत्तर मे विंध्याचल जोगीयों के मध्य यह भ्रंश घाटी में बहती हुई जबलपुर में भेडा घाट की संगमरमर की चट्टानों में धुंआधार जल प्रपात बनाती है
- अंत में यह भड़ौच के दक्षिण में अरब सागर में गिरती है तथा ज्वारनदमुख का निर्माण करती है।
- यह अरब सागर में जल गिराने वाली नदियों में सबसे लम्बी (1312 किलोमीटर) नदी है
- यह तीन राज्यों मध्यप्रदेश, गुजरात व महाराष्ट्र में प्रवाहित होती है।
- सरदार सरोवर परियोजना इसी नदी पर है ।

ताप्ती (तापी) नदी –

- इसकी उत्पत्ति मध्यप्रदेश के महादेव पहाड़ी के पास बेतुल जिलें के मुलताई से निकलती है ।
- सतपुडा श्रेणी व अजंता श्रेणियों के बीच भ्रंश घाटी में बहते हुए सूरत शहर के आगे खम्भात की खाड़ी में अपना जल गिराती है।

- इसकी द्रोणी मध्यप्रदेश, गुजरात , महाराष्ट्र है।

लूनी नदी -लूनी नदी अजमेर के दक्षिण-पश्चिम में नाग पहाड़ी (अरावली श्रेणी) से निकलती है तथा कच्छ के रण में विलीन हो जाती है। लूनी राजस्थान का सबसे बड़ा नदी तंत्र है।

- **साबरमती नदी** -यह उदयपुर जिले (राजस्थान) के पास अरावली श्रेणी से निकलती है तथा खम्भात की खाड़ी मे अपना जल गिराती है। गांधीनगर व अहमदाबाद इस नदी के तट पर स्थित है।

- **माही नदी** - इसका उद्गम मध्य प्रदेश में विंध्य श्रेणी के पश्चिम से हुआ है। यह तीन राज्यों में मध्यप्रदेश, राजस्थान व गुजरात में प्रवाहित होते हुए अपना जल खम्भात की खाड़ी में गिराती है। यह कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- **भादर नदी** -गुजरात के राजकोट जिले से निकलती है तथा अपना जल अरब सागर में गिराती है।
- **वैंतरणा नदी** -यह नासिक जिले (महाराष्ट्र) की त्रिंबक की पहाडियों से निकलती है तथा अपना जल अरब सागर में गिराती है।

- **माण्डवी तथा जुआरी** -यह गोवा की दो प्रमुख नदियाँ हैं जो अपना जल अरब सागर में गिराती है ।

- **कालिंदी या काली नदी** -यह कर्नाटक के बेलगाँव जिले से निकलती है तथा अपना जल करवाड़ की खाड़ी में गिराती है ।

- **शरावती नदी** –यह कर्नाटक के शिमोगा जिले से निकलती है। तथा भारत का सबसे ऊँचा गरसोप्पा (जोग) जल प्रपात इसी नदी पर है ।

- **पेरियार नदी** – यह केरल की सबसे लम्बी नदी है। यह अन्नामलाई की पहाड़ियों से निकलती है तथा वैम्बानाद के उत्तर में अपना जल अरब सागर में गिराती है।
- **भरतपूझा नदी** - यह भी अन्नामलाई की पहाड़ियों से निकलती है। यह केरल की सबसे बड़ी (जलग्रहण क्षेत्र) नदी है इसे पोंनानी ' के नाम से भी जानते हैं।

भारत की प्रमुख झीलें

झील	**सम्बन्धित राज्य**
वेम्बंनाड	केरल
अष्टमुड़ी	केरल
पेरियार	केरल
हुसैन सागर	तेलंगाना
राकसताल	उतराखंड
देवताल	उतराखंड
रूपकुंड	उतराखंड
सातताल	उतराखंड
सांभर	राजस्थान
उदयसागर	राजस्थान
जयसमंद	राजस्थान
डिंडवाना	राजस्थान
फतेहसागर	राजस्थान
राजसमंद	राजस्थान
चिल्का	ओडिशा
वुलर	जम्मू-कश्मीर
मानस	जम्मू-कश्मीर
नागिन	जम्मू-कश्मीर
शेषनाग	जम्मू-कश्मीर
डल	जम्मू-कश्मीर
लोनार	महाराष्ट्र
सूरजकुंड	हरियाणा
पुलीकट	तमिलनाडु व आंध्रप्रदेश
हमीरसर	गुजरात
फुल्हर	उत्तर प्रदेश
कोलेरू	आध्रप्रदेश
लोकटक	मणिपुर

- **प्रमुख जल प्रपात**

जल प्रपात	नदी /राज्य
गरसोप्पा या जोग जल प्रपात	शरावती नदी
धुआंधार जल प्रपात	नर्मदा नदी/ मध्यप्रदेश
शिव समुन्द्रम जल प्रपात	कावेरी नदी

गोकक जल प्रपात	कृष्णा नदी के सहायक नदी गोकक नदी
हुण्डरू जल प्रपात	स्वर्ण रेखा नदी
कपिल धारा जल प्रपात	नर्मदा नदी /मध्यप्रदेश
दूध सागर जल प्रपात	माण्डवी नदी /गोवा
चूलिया जल प्रपात	चम्बल नदी
चित्र कूट जल प्रपात	इन्द्रावती नदी
विरदी जल प्रपात	उत्तराखंड में
येना जल प्रपात	महाबलेश्वर के पास
वसुंधरा जल प्रपात	अलकनंदा नदी
पायकार जल प्रपात	पायकारा नदी
माधर जल प्रपात	नर्मदा नदी
कुंचीकुल जल प्रपात	वारही नदी ((शिमोंग)
बारहपानी जल प्रपात	बुद्ध बालंगा नदी ((मयुरभंज)
थोसेबर जल प्रपात	सतारा (महाराष्ट्र)

अध्याय – 4

जलवायु

- भारत में उष्ण कटिबंधीय मानसून जलवायु पायी जाती है इस जलवायु के अंतर्गत अधिकतम वर्षा ग्रीष्म ऋतु में प्राप्त होती है।
- भारतीय मौसम विभाग ने भारत के वर्ष को जलवायु परिस्थितियों के आधार पर 4 प्रमुख ऋतुओं में विभाजित किया है।

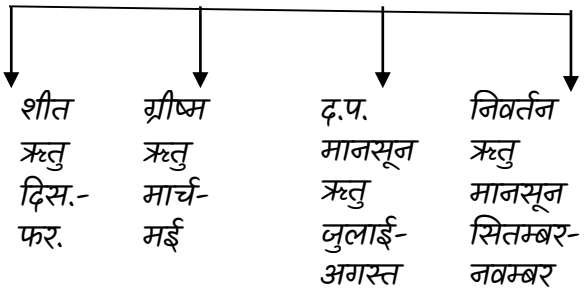

- नवम्बर के अंत से शुरू होकर दिसम्बर से फरवरी के बीच पायी जाने वाली **शीत ऋतु** के दौरान दिसम्बर तथा जनवरी सबसे ठंडे महीने होने के साथ द्रास घाटी क्षेत्र में सबसे कम तापमान पाया जाता है।
- इस ऋतु के दौरान सूर्य के दक्षिण गोलार्द्ध में होने से भारत में तापमान कम पाया जाता है।
- उत्तर भारत में 20^0 डिग्री सेल्सियस से कम तथा दक्षिण भारत में 20^0 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पाया जाता है।
- 20^0 डिग्री सेल्सियस की समताप रेखा भारत को 2 समान भागों में बांटती है। दक्षिण भारत में उत्तर भारत की अपेक्षा अधिक तापमान पाया जाता है। क्योंकि दक्षिण भारत में समकारी प्रभाव रहने के साथ विषुवत रेखा की निकटता है।
- इस ऋतु के दौरान सम्पूर्ण भारत पर उच्च दाब की परिस्थितियाँ पायी जाती है।
- इस ऋतु के दौरान पवनें उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर चलती है। यह पवनें स्थल से जल की ओर चलने के कारण शुष्क होती है।
- शीत ऋतु में सामान्यतः वर्षा नहीं होती परन्तु पश्चिमी विक्षोभ के कारण उत्तर-पश्चिमी भारत में मावठ के रूप में वर्षा प्राप्त होती है।

विश्व भूगोल

ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल

- ब्रह्मांड का अध्ययन खगोलिकी कहलाता है।
- महाविस्फोट सिद्धांत (big-bang theory) ब्रह्मांड की उत्पत्ति से संबंधित है ।
- ब्रह्मांड दिखाई पड़ने वाले समस्त आकाशीय पिंड को ब्रह्मांड कहते हैं। ब्रह्मांड विस्तारित हो रहा है ब्रह्मांड में सर्वाधिक संख्या तारों की है।

तारा

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश हो तारा कहलाता है।
- तारा बनने से पहले विरल गैस का गोला होता है।
- जब ये विरल गैस केंद्रित होकर पास आ जाते हैं तो घने बादल के समान हो जाते हैं जिन्हें निहारिका कहते हैं।
- जब इन नेबुला में सलंयनविधि द्वारा दहन की क्रिया प्रारंभ हो जाती हैं तो वह तारों का रूप ले लेता है।
- तारों में हाइड्रोजन का सलंयन हिलियम में होता रहता है । तारों में इंधन प्लाज्मा अवस्था में होता है।
- तारों का रंग उसके पृष्ठ ताप पर निर्भर करता है ।
- लाल रंग - निम्न ताप (6 हजार डिग्री सेल्सियस)
- सफेद रंग - मध्यम ताप
- नीला रंग - उच्च ताप

  तारों का भविष्य उसके प्रारंभिक द्रव्यमान पर निर्भर करता है।
- जब तारा सूर्य का ईंधन समाप्त होने लगता है तो वह लाल दानव का रूप ले लेता है और लाल दानव का आकार बड़ा होने लगता है।
- यदि लाल दानों का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान के 1.44 गुना से छोटा होता है तो वह श्वेत वामन बनेगा।

सौर मंडल

- सूर्य तथा उसके आसपास के ग्रह, उपग्रह तथा शुद्र ग्रह, धूमकेतु, उल्कापिंड उनके संयुक्त समूह को सौरमंडल कहते हैं ।
- सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है ।
- सौरमंडल में जनक तारा के रूप में सूर्य है।
- सौर मंडल के सभी पिंड सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

सूर्य

- यह हमारा सबसे निकटतम तारा है सूर्य सौरमंडल के बीच में स्थित है। सूर्य की आयु लगभग 1.5 अरब वर्ष है जिसमें से वह 5 अरब वर्ष जि चुका है।
- सूर्य के अंदर हाइड्रोजन का हिलियम में संलयन होता है और ईंधन प्लाज्मा अवस्था में रहता है।
- आंतरिक संरचना के आधार पर सूर्य को तीन भागों में बांटते हैं।

सूर्य की बाहरी परत

- सूर्य के बाहर उसकी तीन परतें हैं ।

1. प्रकाश मंडल

- यह सूर्य का दिखाई देने वाला भाग है इसका तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस होता है।

2. वरुण मंडल

- यह बाहरी परत के आधार पर मध्य भाग है इसका तापमान 32400 डिग्री सेल्सियस होता है।

3. (corona)

- यह सूर्य का सबसे बाहरी परत होता है जो लपट के समान होता है इसे केवल सूर्य ग्रहण के समय देखा जाता है इसका तापमान 27lac डिग्री सेल्सियस होता है।
- सूर्य में 75% हाइड्रोजन तथा 24% हिलीयम है ।
- शेष तत्व की मात्रा 1% में ही निहित है ।
- सूर्य का द्रव्यमान पृथ्वी से 332000 गुना है ।
- सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुना है ।
- सूर्य का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से 28 गुना है ।
- सूर्य का घनत्व पृथ्वी से 20 गुना है।
- सूर्य से प्रति सेकंड **10** ^{26} जूल ऊर्जा निकलती है ।
- सूर्य पश्चिम से पूरब घूर्णन करता है।
- सूर्य का विषुवत रेखीय भाग 25 दिन में घूर्णन कर लेता है।
- सूर्य का ध्रुवीय भाग 31 दिन में घूर्णन कर लेता है ।

ग्रह

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास ना अपनी ऊष्मा हो और ना ही अपना प्रकाश हो वह ऊष्मा तथा प्रकाश के लिए अपने निकटतम तारे पर आश्रित हो।तथा उसी का चक्कर लगाता हो प्रारंभ मे ग्रहों कि संख्या 9 थी परंतु वर्तमान में 8 ग्रह है ग्रहों केा 2 श्रेणियों में बांटते है ।

पार्थिव

- इन्हें आंतरिक ग्रह भी कहते हैं ।

- यह पृथ्वी से समानता रखते हैं ।
- इनका घनत्व अधिक होता है तथा यह ठोस अवस्था में होते हैं ।
- इनके उपग्रह कम होते हैं या होते ही नहीं है इन ग्रहों की संख्या चार होती है।

a. बुध
b. शुक्र
c. पृथ्वी
d. मंगल

<u>जोवियन ग्रह</u>

- इसे बाह्य ग्रह कहते हैं। यह बृहस्पति से समानता रखते हैं ।इनका आकार बड़ा होता है किन्तु घनत्व कम होता है, यह गैस की अवस्था में पाए जाते हैं।
  इनके उपग्रहों की संख्या अधिक है।

<u>प्लूटो</u>

- यह नौवां ग्रह था । किन्तु 24 अगस्त 2006 को चेक गणराज्य की राजधानी प्राण में अंतरराष्ट्रीय खगोल खंड की बैठक हुई जिसमें प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालकर बोना ग्रह में डाल दिया ।
- प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालने के तीन कारण थे

1. इसका आकार अत्यधिक छोटा था
2. इसकी कक्षा दीर्घ वर्तीय नहीं थी
3. इसकी कक्षा वरुण की कक्षा को काटती थी

<u>उपग्रह</u>

- इनके पास ऊष्मा और प्रकाश दोनों नहीं था ।
- यह अपने निकटतम तारे से ऊष्मा और प्रकाश लेते हैं किन्तु यह चक्कर अपने निकटतम ग्रह का लगाते हैं ।

उपग्रह दो प्रकार के होते हैं

1. **प्राकृतिक उपग्रह** -चंद्रमा
2. **कृत्रिम उपग्रह** -यह मानव निर्मित होते हैं संचार तथा मौसम की भविष्यवाणी करता है।

<u>सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रह</u>

1. बुध
2. पृथ्वी
3. बृहस्पति
4. अरुण
5. शुक्र
6. मंगल
7. शनि
8. वरुण

<u>पृथ्वी से दूरी के अनुसार</u>

1. शुक्र
2. मंगल
3. बुध
4. बृहस्पति
5. शनि
6. अरुण
7. वरुण

<u>आकार के अनुसार ग्रह</u>

1. बृहस्पति
2. शनि
3. अरुण
4. वरुण
5. पृथ्वी
6. शुक्र
7. मंगल
8. बुध

<u>आंखों से हम पांच ग्रहों को देख सकते हैं ।</u>

1. बुध
2. शुक्र
3. मंगल
4. बृहस्पति
5. शनि

<u>उल्टा घूमने वाले ग्रह पूरब से पश्चिम</u>

- शुक्र तथा अरुण
- सर्वाधिक घनत्व पृथ्वी का तथा कम घनत्व शनि का ।
- सबसे बड़ा उपग्रह बृहस्पति का गेनीमेड और सबसे छोटा उपग्रह मंगल का डिवोर्स है ।
- सबसे तेज घूर्णन बृहस्पति सबसे धीमा घूर्णन शुक्र 249 दिन ।
- सबसे तेज परिक्रमण वर्ष की अवधि बुध 88 दिन सबसे धीमा शुक्र 164 साल।
- सबसे गर्म ग्रह शुक्र सबसे ठंडा ग्रह अरुण वरुण है।

Gold lock zone

- अंतरिक्ष का वह स्थान जहां जीवन की संभावना पाई जाती है उसे गोल्डी लॉक्स जोन कहते हैं ।
- केवल पृथ्वी पर जीवन संभव है ।
- मंगल पर इसकी संभावना है ।
- जीवन की उत्पत्ति के लिए कपास का पौधा अंतरिक्ष पर भेजा गया ।

बुध ग्रह (मरकरी)

- इसका नामकरण रोमन संदेशवाहक देवता के नाम पर हुआ है ।
- इस ग्रह का वायुमंडल नहीं है किन्तु बहुत ही कम मात्रा में वहां ऑक्सीजन पाई जाती है ।
- वायुमंडल ना होने के कारण यह ऊष्मा को रोक नहीं पाता है । जिस कारण दिन में इसका तापमान 420 डिग्री सेल्सियस तथा रात को -180 डिग्री सेल्सियस तापमान हो जाता है अर्थात इस ग्रह पर सर्वाधिक तापांतर 600 डिग्री सेल्सियस का देखा जाता है अतः यहां जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है ।
- वायुमंडल ना होने के कारण इस ग्रह पर सर्वाधिक उल्का पात हुआ है ।
- सबसे बड़ा क्रेटर कोरोलिस बेलिस है ।

शुक्र

- इस ग्रह पर सर्वाधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड पाया जाता है ।
- यह सूर्य से आने वाली सभी ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है
- इसे सबसे गर्म तथा चमकीला ग्रह कहते है ।
- इसे सौरमंडल की परी कहते हैं
- इस पर प्रेशर कुकर के समान स्थिति पाई जाती है जिस कारण इसे दम घुटने वाला कहते हैं ।
- यह पृथ्वी से समानता रखता है अतः इसे पृथ्वी का सहोदर ,भगिनी ,जुड़वा बहन कहते हैं ।
- यह अपने अक्ष पर उल्टा अर्थात पूर्व से पश्चिम घूमता है जिस कारण यहां सूर्योदय पश्चिम में होता है ।
- यह अपने अक्ष पर 243 दिन में घूर्णन कर लेता है । जबकि सूर्य का परिक्रमण 224 दिन में पूरा करता है ।
- अर्थात इस ग्रह का घूर्णन और परिक्रमण समान है।
- अर्थात इस ग्रह पर एक दिन । वर्ष के बराबर होगा ।
- बुध तथा शुक्र के पास उपग्रह नहीं है इसके उपग्रह को सूर्य खींच लेता है।

भोर तथा सांझ का तारा

- भोर तथा सांझ में प्रकाश काम रहता है । इसी कारण सूर्य से जब प्रकाश आता है तो बुध तथा शुक्र से टकराकर परिवर्तित होता है ।
- इस परिवर्तित प्रकाश के कारण बुध तथा शुक्र चमकीले दिखते हैं जिससे शुक्र निकट होने के कारण अधिक चमकीला दिखता है ।
- बुध एवं शुक्र दोनों को भोर तथा सांझ का तारा कहते हैं ।

मंगल

- इस पर Tron ऑक्साइड की अधिकता है । जिस कारण यह लाल दिखता है
- यह 25 डिग्री पर झुका हुआ है । जिस कारण इस पर पृथ्वी के समान ऋतु परिवर्तन देकर जाते हैं ।
- इस ग्रह पर जीवन की संभावना सर्वाधिक है ।
- इस ग्रह पर पूरे सौरमंडल का सबसे ऊंचा पर्वत मिक्स ओलंपिया है जिसकी ऊंचाई 30000 किलोमीटर है जो माउंट एवरेस्ट के 3 गुना से भी अधिक ऊंचा है ।

- **बृहस्पति**
- यह सबसे बड़ा ग्रह है , किन्तु यह गैसीय अवस्था में है ।
- इस पर सल्फर डाइऑक्साइड की अधिकता है जिस कारण यह हल्का पीला दिखता है।
- यह एकमात्र ग्रह है जो हिमरहित है।
- यह अपने अक्ष पर सबसे तेज घूर्णन करता है । जो लगभग 9:30 घंटे में पूरा कर लेता है।
- बृहस्पति के 73 उपग्रहों में से केवल 16 उपग्रहों को ही मान्यता प्राप्त है।
- इसका सबसे बड़ा उपग्रह गेनीमेड है।
- बृहस्पति के अत्यधिक विशालता के कारण इसे तारा सदृश्य ग्रह कहते हैं।

शनि ग्रह

- यह सबसे कम घनत्व वाला ग्रह है ।
- इसका घनत्व .7gm/cm^3 है ।
- कम घनत्व के कारण यह ह पानी में नहीं डूबेगा इस ग्रह के चारों ओर 7 छल्ले हैं ।
- जिन्हें ए ,बी ,सी, डी, ई ,एफ ,जी कहते हैं ।यह वलय इसी ग्रह का टुकड़ा है जो शनि के गुरुत्वाकर्षण के कारण इसी के समीप रहता है
- इन छल्लों के कारण ही शनि को आकाशगंगा सदृश ग्रह कहते हैं ।

- औरंगजेब ने कुरान को अपने शासन का आधार बनाया। इसने सिक्के पर कलमा खुदवाना, नवरोज का त्यौहार मनाना, भांग की खेती करना, गाना बजाना, झरोखा दर्शन, तुलादान प्रथा (इस प्रथा में सम्राट को उसके जन्म दिन पर सोने, चाँदी तथा अन्य वस्तुओं से तौलने की प्रथा थी। यह अकबर के जमाने में प्रारंभ हुई थी।)आदि पर प्रतिबंध लगा दिया।
- औरंगजेब ने दरबार में संगीत पर पाबंदी लगा दी तथा सरकारी संगीतज्ञों को अवकाश दे दिया गया। भारतीय शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकें औरंगजेब के ही शासनकाल में लिखी गयी। औरंगजेब स्वयं वीणा बजाने में दक्ष था।
- बीबी के मकबरे का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।
- मुगल कालीन भू-राजस्व प्रणाली
- **खेत बटाई** – खेत में एक ही अनाज का बँटवारा।
- **लंक बटाई** – अनाज को खलियान से लाकर बिना भूसा निकाले बँटाई ।
- **रास बटाई** – अनाज से भूसा निकालकर बँटाई
- औरंगजेब के शासनकाल मुगल सेना में सर्वाधिक हिन्दू सेनापति थे।
- फ्रांसीसी यात्री फ्रांकोइस बर्नियर औरंगजेब के चिकित्सक थे।

आधुनिक भारत का इतिहास

अध्याय – I

यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम

पुर्तगाली→डच→ब्रिटिश→डेनिश→फ्रांसीसी→स्वीडस

वास्कोडिगामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कंपनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। भारत में आने के लिए इन्होंने नये समुद्री मार्ग की खोज की।
- पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की।
- बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुँचा। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया।

- **नोट :- पेड्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।**
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।
- पुर्तगाली:- 1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा [1505 - 1509]

- फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर/वायसराय बनकर आया था।
- इसने 1509 में मिस्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को परास्त कर दीव पर अधिकार कर लिया। इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था की यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्य बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो (उसके द्वारा अपनाई निति **नीले या शांत जल की निति** कहलाई)
- यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेड़ा ने शुरु की थी।
- पुर्तगाल की राजधानी –लिसवन

अल्फांसो डी. अल्बुकर्क (1509 - 1515)

- भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी. अल्बुकर्क था।
- जो सर्वप्रथम 1509 ई. में भारत आया और उसी समय (1509 ईस्वी) उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया ।
- 1509 ई. में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई. पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- 1511 ई. में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित हर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया ।
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में सती प्रथा बन्द करवा दी।
- अल्बुकर्क राजाराम मोहन राय का पूर्व गामी था।
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया ।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

निन्हो डी. कुन्हा (1529-1538)

- अल्बुकर्क के बाद दूसरा महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर निन्हों डी. कुन्हा था। जिसने 1529 ई. में भारत में कार्य भार ग्रहण किया ।
- कुन्हा ने 1530 ई. में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा को बनाया।
- कुन्हा ने दमन, सालसेट, चौल, बम्बई सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुन: अपने केन्द्र स्थापित किये।
- कुन्हा ने हुगली और सैनथोमा मद्रास के पास पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया ।
- भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन डिसूजा 1542-1545 के समय हुआ ।
- मुगल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली इसाई पादरियों मोंसरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ ।
- भारत में तम्बाकू की खेती जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात्य हुई।
- पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की ।
- 1661 ई. में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया ।
- बंगाल के शासक 'मसूद शाह' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- अकबर' की अनुमति से हुगली में कंपनी की स्थापना की गई।
- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।
- कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिए अरब सागर में नहीं जा सकता था।
- इन जहाजों में काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।

पुर्तगालियों की भारत को देन

- मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूंगफली, आलू, मक्का, पपीता और अमरुद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।
- जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई.) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ।

डच

- डच पुर्तगालियों के बाद भारत आये।
- डच नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- डचों की कंपनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कंपनी ऑफ नीदरलैण्ड था। की स्थापना 1602 में की थी । वास्तविक नाम वेरींगीडे ओस्त इन्डिशे कंपनी था ।
- डचों ने भारत में अपनी "प्रथम फैक्ट्री"1605 ई. में मसूलीपट्टनम में स्थापित की।
- डचों का भारत में प्रथम दल "कार्नेलियस डी होउटमैन के नेतृत्व में भारत आया । वह भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था ।
- डचों ने 1602 ई. में गुजरात, कोरोमण्डल तट एवं बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा में व्यापारिक फैक्ट्रियाँ स्थापित की।

- डचों ने मसूलीपट्टनम, पुलीकट, सूरत, कराइकल, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में कोठियाँ खोली।
- डचों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री '1627'में पीपली-(स्थाई कंपनी)में स्थापित की।
- '1653' में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्रियां स्थापित की ।
- चिनसुरा (बंगाल) में डचों ने गुस्ताबुस नामक किले का निर्माण किया।
- इसके बाद डचों ने 'कासिमबाजार' और पटना' में फैक्ट्री स्थापित की।
- कोचीन और कन्नानोर डचों के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।
- 1690 ई. के बाद पुलीकट के बदले नागपट्टनम डचों का मुख्य केन्द्र बन गया।
- डच मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, वस्त्र, अफीम व शोरा का व्यापार करते थे।
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता (Cartel) पर आधारित थी।
- '1759' में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ, जिसमें डच पराजित हुए और उनका भारत से अन्तिम रुप से पतन हो गया।
- बेदरा के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लॉर्ड क्लाइव ने किया।
- नोटः- 'मसूलीपट्टनम और सूरत से' डच 'नील' का निर्यात करते थे । भड़ौच बन्दरगाह से डच कपड़े का निर्यात करते थे।
- पुलीकट में डच अपने स्वर्ण पैगोडा (सिक्के) डालते थे ।
- भारत में अफीम उचों द्वारा जावा और चीन में निर्यात किया जाता था।
- डच फैक्ट्रियों के प्रमुखों को फैक्टर कहा जाता था।
- डच कंपनी के निदेशकों को भद्रजन XVII कहा जाता था।

<u>अंग्रेज</u>

- भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री जॉन मिल्डेन हॉल था जो स्थल मार्ग से '1597' में आया था।
- भारत में कैप्टन हॉकिन्स '1608 ई.'में समुद्री मार्ग से होकर (Red Dragon) नामक व्यापारिक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर आया।
- हॉकिन्स प्रथम अंग्रेज था जिसने भारत की भूमि पर समुद्री मार्ग से प्रवेश किया था ।
- 1599 ई. में लन्दन में व्यापारियों के एक समूह ने The Governor and company of merchants of trading into the east Indies नामक कंपनी की स्थापना पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
- 31 दिसम्बर 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कंपनी को '15 वर्षों' के लिए पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने '1608 ई.' में सूरत में एक व्यापारिक कोठी खोली।
- जेम्स प्रथम के एक पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स को '1608' में भारत भेजा।
- 1609 ई.' में कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से आगरा में मिला था।
- जहाँगीर ने हॉकिन्स को चार सौ का मनसब तथा एक जागीर और 'खान की उपाधि' दी।
- कैप्टन हॉकिन्स तुर्की और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- '1611 ई.' में हॉकिन्स इंग्लैण्ड लौट गया।
- '1613 ई.' में जहाँगीर ने अंग्रेजों को सूरत में स्थाई रुप से एक कोठी खोलने की अनुमति दी।
- हॉकिन्स के वापस जाने के बाद '1615 ई.' में जेम्स प्रथम ने सर टॉमस रो को मुगल दरबार में भेजा।
- 10 जनवरी 1616 ई. में टॉमस रो जहाँगीर से अजमेर में मिला था।
- सर टॉमस रो 3 वर्ष तक 'राजदूत' के रुप में अजमेर, माण्डू, इलाहाबाद में रहा।
- फरवरी 1619 में सर टॉमस रो इंग्लैण्ड वापस चला गया।
- 1640 ई. में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की और आत्मरक्षा के लिए वहाँ एक दुर्ग का निर्माण कराया और उसका नाम 'सेंट जार्ज का किला' ('फोर्ट सेंट जार्ज) रखा।
- हुगली के बाद कासिम बाजार, पटना तथा राजमहल में अंग्रेजी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- 1661 ई. में ही चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी केथरीन से विवाह करने के उपलक्ष्य में दहेज के रुप में बम्बई बन्दरगाह मिला था।
- चार्ल्स द्वितीय ने 1668 ई. में बम्बई बन्दरगाह को दस-पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया ।
- बम्बई का वास्तविक संस्थापक 'गेराल्ड आंगियार' को माना जाता है।
- ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के समय भारत में सम्राट अकबर (1600 ई.) का शासन था।
- अंग्रेजों ने हार्मुज बन्दरगाह को पुर्तगालियों से 1604 ई. में जीता था।

- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् 1715 में कंपनी ने मुगल दरबार में जॉन सारमन की अध्यक्षता में एक शिष्ट मण्डल भेजा।
- शिष्ट मण्डल में विलियम हैमिल्टन शल्य चिकित्सक था जिसने फरुखसियर को एक भयंकर रोग से स्वस्थ्य किया।

बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना

- 1686 ई. में अंग्रेजों एवं औरंगजेब की भिड़न्त हुई (कारण हुगली में अंग्रेजों द्वारा लूट) लड़ाई में अंग्रेजों की हार हुई एवं अंग्रेजों को हुगली छोड़ना पड़ा।
- औरंगजेब ने अंग्रेजों से 1,50,000 रु. हर्जाना लेकर पुनः व्यापार की छूट प्रदान कर दी।
- 1698 ई. में बंगाल के सूबेदार अजीम-उस-शान ने सूतानती, कोलकाता व गोविंदपुर की जमींदारी अंग्रेजों को सौंप दी।
- जॉब चॉरनाक ने सूतानती, कोलकाता एवं गोविंदपुर को मिलाकर एक नये नगर 'कलकत्ता' की स्थापना की।
- 1700 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किले की स्थापना की गई। इसका गवर्नर- चार्ल्स आयर को बनाया गया।
- सूरत में 10,000 रु. वार्षिक देने पर कंपनी के समस्त आयात-निर्यात को कर मुक्त कर दिया गया।

डेनिस या डेन कंपनी

- अंग्रेजों के बाद भारत में डेनिस व्यापारी 1616 ई. में आये।
- डेन लोगों ने अपनी प्रथम फैक्ट्री 1620 ई. में तंजौर के ट्रानकोबार (Tamil Nadu) में स्थापित की।
- डेन लोगों ने दूसरी फैक्ट्री 1676 ई. में बंगाल के सेरामपुर में स्थापित की।
- डेनिशों ने भारत में लगभग '25 वर्षों तक व्यापार किया।
- इनके व्यापार में लगातार गिरावट होने के कारण 1745 ईस्वी में इन्होंने अपनी सभी फैक्ट्रियाँ अंग्रेजों के हाथों कम दामों में बेच दी एवं भारत छोड़कर चले गये।

फ्रांसीसी

- भारत में व्यापारिक दृष्टि से सबसे अन्त में फ्रांस के व्यापारी आये।
- फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कॉलबर्ट के लगातार प्रयासों के बाद 1664 ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई।
- जिसका नाम कम्पने देस इन्डेस ओरियन्टलेस रखा गया। इस कंपनी का निर्माण फ्रांस की सरकार द्वारा किया गया।
- 1667 ई. में फ्रेंसिस केरॉन या फ्रेंको कैरो की अध्यक्षता में एक दल भारत आया। इस दल ने 1668 में सूरत में पहली फैक्ट्री (फ्रांसीसी) स्थापित की।
- फ्रांसीसियों ने 1669 ई. में मसूलीपट्टनम में दूसरी फैक्ट्री स्थापित की।
- 1673 ई. में फ्रेंसिस मार्टिन ने सूबेदार शेर खाँ लोदी से पुंडूचेरी नामक एक गाँव प्राप्त किया जो बाद में पाण्डिचेरी नाम से जाना गया।
- फ्रेंसिस मार्टिन ने पाण्डिचेरी में फोर्टलुई का निर्माण कराया।
- इसीलिए फ्रेंसिस मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- बंगाल में फ्रांसीसियों ने मुगल सूबेदार शाइस्ता खाँ से भूमि प्राप्त करके 1690-92 में चंद्रनगर, नामक प्रसिद्ध केन्द्र स्थापित किया।
- 1693 ई. में डचों ने अंग्रेजों की सहायता से फ्रांसीसियों से पाण्डिचेरी को छीन लिया किन्तु 1697 ई. की रिजविक की संधि द्वारा फ्रांसीसियों को पाण्डिचेरी दोबारा दे दिया गया।
- 1721 ई. में फ्रांसीसियों ने मॉरिशस पर अधिकार कर लिया।
- 1724 ई. में मालाबार समुद्र तट पर स्थित माहे पर अधिकार कर लिया।
- 1739 ई. में फ्रांसीसियों ने करिकाल पर अधिकार कर लिया।

अंग्रेज, फ्रांसीसी संघर्ष

- भारत में अंग्रेज-फ्रेंच युद्ध ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध से आरम्भ हुआ था।
- उस समय फ्रांसीसियों का मुख्यालय पाण्डिचेरी में था तथा मछलीपट्टनम, करिकाल, माहे, सूरत एवं चन्द्रनगर में उप - कार्यालय थे।
- अंग्रेजों की मुख्य बस्तियाँ - मद्रास, बम्बई और कलकत्ता में थीं।
- अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों का भारत में संघर्ष कर्नाटक से प्रारम्भ हुआ था।

कर्नाटक का प्रथम युद्ध [1746-48 ई.]

- कारण :- यह युद्ध 1740 में आरंभ हुए ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का विस्तार मात्र था। इसके तात्कालिक कारण निम्नलिखित थे –

- अंग्रेज कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जलपोतों पर कब्जा कर लिया जाना ।
- फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने मॉरीशस के फ्रांसीसी गवर्नर लाबुडोर्ने की सहायता से मद्रास पर अधिकार कर लेना।
- सेन्ट थोमे का युद्ध (अडयार नदी के किनारे):-
- यह फ्रांसीसी सेना एवं कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के बीच लड़ा गया ।
- इस युद्ध में फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व कैप्टन पैंराडाइज ने किया । जिसमें फ्रांसीसी सेना की जीत हुई।
- युद्ध की समाप्ति : - यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति एक्स -ला-शापेल की सन्धि (1748 ई.) से हुई। इसके प्रभाव स्वरूप से भारत में भी युद्ध समाप्त हो गया ।
- कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1749-54.ई.)
- कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756 -1763 ई.)
- पुर्तगाली वायसराय वास्कोडिगामा की समाधि कोचीन में हैं ।
- पुर्तगाली दूत अन्तानियो कैब्राल, अकबर के शासनकाल में भारत आया था।
- भारत में पुर्तगाली सामुद्रिक साम्राज्य को एस्तादो द इंडिया की उपमा दी जाती है।
- कालीकट का मलयाली नाम कोषिक्कोड है ।'
- मद्रास का संस्थापक फ्रांसिस डे था।
- नील की सबसे अच्छी किस्म बयाना में तैयार होती थी।
- जॉन सरमन मिशन फर्रुखशियर के दरबार में आया था।
- इंटरपोलर कौन थे ?
- एशिया में मुफ्त व्यापार करने वाले अंग्रेज व्यापारी ।
- लार्ड राबर्ट क्लाइव को 'स्वर्ण से उत्पन्न सेना नायक' कहा गया है।
- टॉमस रो जहाँगीर से मिलने अजमेर से मांडू आया था ।
- 1505 ई. में फ्रांसिस्को डी अल्मेडा भारत में प्रथम पुर्तगाली वायसराय बनकर भारत आया था ।
- 1596 ई. में भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक कार्नेलियस डी हाउटमैन था ।
- भारत में गोथिक स्थापत्य कला की स्थापना का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है ।
- अल्बुकर्क सती प्रथा का विरोध करने वाला यूरोपीय व्यक्ति था ।
- कैप्टन हॉकिन्स को मुगल बादशाह जहाँगीर ने 400 का मनसब प्रदान किया था ।
- भारत में यूरोपीय शक्तियों द्वारा पहला किला गोवा में निर्मित किया गया ।
- औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य में कुल 21 प्रान्त थे।

<u>बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.)</u>

- 1707 ई. में 63 वर्षीय बहादुर शाह प्रथम, जिसे शाह आलम -1 भी कहा जाता है, मुगल सम्राट बना।
- बहादुर शाह ने औरंगजेब द्वारा लगायी गई जजिया कर की वसूली बन्द कर दी।
- बन्दा बहादुर ने 1710 में ही गुरुनानक व गुरु गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के जारी किये।
- बहादुर शाह प्रथम को शाहे बेखबर की उपाधि खफी खाँ ने दी।

जहाँदर शाह (1712-13 ई.)

- 51 वर्ष की आयु में 29 मार्च 1712 को शासक बने जहाँदरशाह ने "जुल्फिकार खाँ" को अपना 'वजीर' और उसके पिता 'असद खाँ' को अपना 'वकील' नियुक्त किया ।
- 'जुल्फिकार खाँ' की सलाह पर जहाँदर शाह ने अपने शासन काल में 'जजिया कर' को समाप्त कर दिया।
- जहाँदर शाह ने जयसिंह को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया, और 'मिर्जा राजा' की उपाधि दी।
- मारवाड़ के अजीतसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया, और 'महाराजा' की उपाधि दी।
- जहाँदर शाह ने राजाराम के पुत्र शिवाजी द्वितीय को 5000 का मनसब तथा 'अनूप सिंह' का खिताब दिया।
- जहाँदर शाह एक कमजोर व विलासी शहजादा था तथा शासन के प्रति उदासीन व लापरवाह था इस कारण लोग उसे **'लम्पर्ट मूर्ख'** कहते थे।
- फर्रुखशियर 11 जनवरी 1713 को मुगल सिंहासन पर बैठा ।
- उसने अब्दुलाह खाँ को वजीर और कुतुबुल मुल्क की उपाधि दी ।
- फर्रुखशियर की सबसे बड़ी उपलब्धि बन्दा बहादुर के नेतृत्व में "सिक्खों की हार" थी।
- फर्रुखशियर एक दुर्बल, कायर, सम्राट था इसलिए इसे मुगल वंश का 'घृणित कायर सम्राट' कहा जाता था।
- रफी उद दरजात यह नाम मात्र का और सबसे कम समय (3 माह 4 दिन) तक शासन करने वाला मुगल सम्राट था।
- रफी-उद-दौला इसकी पेचिश रोग के कारण 17 सितम्बर 1719 को फतेहपुर सीकरी में मृत्यु हो गई।

रंगराजन विशेषज्ञ समूह 2014 की रिपोर्ट के अनुसार निर्धनता अनुपात	
सर्वाधिक निर्धनता अनुपात वाले राज्य	
राज्य	प्रतिशत (%)
छत्तीसगढ़	47.9
मणिपुर	46.7
ओडिशा	45.9
सबसे कम निर्धनता अनुपात वाले राज्य	
गोवा	6.3
हिमाचल प्रदेश	10.9
केरल	11.3
सर्वाधिक निर्धनता अनुपात वाले केन्द्रशासित राज्य	
दादर एवं नगर हवेली	35.6
चंडीगढ़	21.3
दिल्ली	15.6
सबसे कम अनुपात निर्धनता वाले केन्द्रशासित राज्य	
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	6.0
लक्ष्यद्वीप	6.5
दमन और दीव	13.7

- समिति ने सिफारिश की कि –
- आय विधि के स्थान पर उपयोग विधि का उपयोग किया जाए ।
- गरीबी की मौद्रिक परिभाषा में समायोजन के लिए WPI आधारित महंगाई के आंकड़े के स्थान पर CPI आधारित महंगाई के आंकड़े का उपयोग किया जाए ।

विविध

महत्वपूर्ण दिवस

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2021

जनवरी	**समारोह की तिथि**
प्रवासी भारतीय दिवस	09 जनवरी
राष्ट्रीय युवा दिवस	12 जनवरी
सड़क सुरक्षा सप्ताह	11 - 17 जनवरी
सेना दिवस	15 जनवरी
राष्ट्रीय बालिका दिवस	24 जनवरी
सुभाष चन्द्र का जन्मदिन	23 जनवरी
गणतंत्र दिवस - 26 जनवरी	26 जनवरी
शहीद दिवस	30 जनवरी
फरवरी	**समारोह की तिथि**
विश्व कैंसर दिवस	4 फरवरी
वेलेंटाइन्स डे	14 फरवरी
संत रविदास जयंती	27 फरवरी
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी
मार्च	**समारोह की तिथि**
राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस	4 मार्च
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	8 मार्च
ऑर्डनेंस फैक्ट्री डे	18 मार्च
विश्व जल दिवस	22 मार्च
शहीद दिवस	23 मार्च and 30 जनवरी
अप्रैल	**समारोह की तिथि**
विश्व स्वास्थ्य दिवस	7 अप्रैल

जलियांवाला बाग नरसंहार	13 अप्रैल
अम्बेडकर जयंती	14 अप्रैल
विश्व पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल
विश्व पुस्तक दिवस	23 अप्रैल
मई	**समारोह की तिथि**
अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस	1 मई
विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस	3 मई
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस	11 मई
मातृ दिवस	09 मई
अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस	15 मई
विश्व तम्बाकू निषेध दिवस	31 मई
जून	**समारोह की तिथि**
विश्व दुग्ध दिवस	1 जून
विश्व पर्यावरण दिवस	5 जून
विश्व रक्त दाता दिवस	14 जून
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	21 जून
दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ़ अंतर्राष्ट्रीय दिवस	26 जून
जुलाई	**समारोह की तिथि**
राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस	1 जुलाई
विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
अगस्त	**समारोह की तिथि**
अंगदान दिवस	13 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
अंतर्राष्ट्रीय फोटोग्राफी दिवस	19 अगस्त
सद्भावना दिवस	20 अगस्त
अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस	21 अगस्त
राष्ट्रीय खेल दिवस	29 अगस्त
सितंबर	**समारोह की तिथि**
राष्ट्रीय पोषण सप्ताह	1-7 सितंबर
शिक्षक दिवस	5 सितंबर
अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	8 सितंबर
हिन्दी दिवस	14 सितंबर
विश्व ओज़ोन दिवस	16 सितंबर
विश्व पर्यटन दिवस	27 सितंबर
अक्टूबर	**समारोह की तिथि**
राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस	1 अक्टूबर
छुआछूत विरोधी सप्ताह	2 अक्टूबर
गांधी जयंती	2 अक्टूबर
अंतर्राष्ट्रीय पशु दिवस	4 अक्टूबर
अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि दिवस	14 अक्टूबर (2nd गुरुवार)
प्राकृतिक आपदा निवारण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस	13 अक्टूबर
विश्व विद्यार्थी दिवस	15 अक्टूबर
विश्व खाद्य दिवस	16 अक्टूबर
विश्व बचत दिवस	31 अक्टूबर
नवंबर	**समारोह की तिथि**
विश्व सुनामी जागरूकता दिवस	5 नवंबर
बाल अधिकार दिवस	20 नवंबर
बाल दिवस	14 नवंबर

चिली	सेंटियागो	पीसो
कोलम्बिया	बोगोटा	पीसो
फ्रेंच गुयाना	कोयेन्ने	यूरो
पैराग्वे	असुन्सियोन	गुआरानी
पेरू	लीमा	न्यवोसोल
उरुग्वे	मोंटेवीडियो	पीसो
वेनेजुएला	कराकस	बोलिवर
ओशिआनिया क्षेत्र के देश		
ऑस्ट्रेलिया	कैंनबरा	डॉलर
फिजी	सूवा	डॉलर
न्यूजीलैंड	वेलिंग्टन	डॉलर

- **पुस्तक एवं लेखक**

क्र.स.		पुस्तक	लेखक
1.		रामायण	वाल्मीकि
2.		महाभारत	वेदव्यास
3.		अष्टाध्यायी	पाणिनी
4.		अर्थशास्त्र	कौटिल्य
5.		बुद्धचरित	अश्वघोष
6.		सौन्दरानन्द	अश्वघोष
7.		मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
8.		देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त
9.		महाभाष्य	पतंजलि
10.		ऋतुसंहार	कालिदास
11.		रघुवंशम्	कालिदास
12.		राजतरंगिणी	कल्हण
13.		विक्रमांकदेव चरित	विल्हण
14.		विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास
15.		कुमारसम्भवम्	कालिदास
16.		मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
17.		अभिज्ञानशाकुत्तलम	कालिदास
18.		स्वप्नवासवदत्ता	भास
19.		हर्षचरित	बाणभट्ट
20.		रत्नावली	हर्षवर्धन
21.		कादम्बरी	बाणभट्ट
22.		प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
23.		नागानन्द	हर्षवर्धन
24.		मृच्छकटीकम	शूद्रक
25.		पृथ्वीराज रासो	चन्द्रबरदाई
26.		कर्पूरमंजरी	राजशेखर
27.		इण्डिका	मेगास्थनीज
28.		पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
29.		प्रबंध कोष	राजशेखर
30.		रसमाला	सोमेश्वर
31.		किरातार्जुनीयम	भवभूति
32.		न्याय भाष्य	वात्स्यायन
33.		कामसूत्र	वात्स्यायन
34.		मालती माधव	भवभूति
35.		कीर्ति कौमुदी	सोमेश्वर
36.		उत्तर रामचरित	भवभूति
37.		कोकशास्त्र	कोका पंडित
38.		नीतिसार	कमण्डक
39.		काव्य मीमांसा	राजशेखर
40.		न्याय मंजरी	जयन्त
41.		श्रृंगार शतक	भर्तृहरि
42.		काव्य प्रकाश	मम्मट
43.		रसरत्नाकर	नागार्जुन
44.		अमरकोष	अमर सिंह
45.		शिशुपाल वध	माघ
46.		चरक सहिंता	चरक
47.		सतसई	हाला
48.		नाट्यशास्त्र	भरत
49.		मिलिन्दपन्हो	नागसेन
50.		मिताक्षरा	विज्ञानेश्वर
51.		सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
52.		सुश्रुत सहिंता	सुश्रुत
53.		माध्यमिका सूत्र	नागार्जुन
54.		गीत संग्रह	यमुनाचार्य
55.		इलाहाबाद स्तम्भ प्रशस्ति	हरिषेण
56.		अग्नि परीक्षा	आचार्य तुलसी

- ***विश्व में सबसे बड़ा छोटा, लम्बा तथा ऊँचा***

सबसे बड़ा महाद्वीप	एशिया
सबसे बड़ा महासागर	प्रशांत महासागर
सबसे बड़ा प्रायद्वीप	अरब प्रायद्वीप
सबसे बड़ी नदी (लम्बाई में)	नील नदी
सबसे बड़ी कृत्रिम झील	कैरीबा झील (ज़ाम्बिया तथा ज़िम्बाब्वे)
सबसे बड़ा महाकाव्य	महाभारत
सबसे बड़ा महल	ब्रूनेई का शाही महल
सबसे बड़ा द्वीप	ग्रीनलैंड
सबसे बड़ा देश क्षेत्रफल में	रूस
सबसे बड़ा टापुओं का समूह	इंडोनेशिया
सबसे बड़ी मूर्ति	स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत में
सबसे बड़ी दीवार	चीन की दीवार
सबसे बड़ा चिड़िया घर	क्रुगर नेशनल पार्क (दक्षिण अफ्रीका)
सबसे बड़ी नदी अपवाह क्षेत्र में	अमेजन नदी
सबसे बड़ा रेगिस्तान	सहारा मरुस्थल
सबसे बड़ा अंतस्थलीय सागर	भूमध्य सागर
सबसे बड़ी ताजे जल की झील	सुपीरियर झील
सबसे बड़ी खारे जल की झील	कैस्पियन सागर झील
सबसे बड़ा डेल्टा	सुंदरवन का डेल्टा (भारत में)
सबसे बड़ा पार्क	वुड बुफेलो नेशनल पार्क कनाड़ा
सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना	वोल्गा बाल्टिक कैनाल
सबसे बड़ा अजायबघर	अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री न्यूयॉर्क
सबसे बड़ा गुम्बद	एस्ट्रो डोम टेक्सास (यू.एस.ए.)
सबसे बड़ा पक्षी	ऑस्ट्रिच (शुतुरमुर्ग)
सबसे छोटा पक्षी	हमिंग बर्ड
सबसे बड़ी खाड़ी	मैक्सिको की खाड़ी
सबसे बड़ा गिरजाघर	बेसिलिका ऑफ सेंट पीटर वेटिकन (इटली)
सबसे ऊँची मीनार	कुतुबमीनार (भारत)
सबसे बड़ा संग्रहालय	ब्रिटिश संग्रहालय (लंदन)
सबसे बड़ा हवाई अड्डा	किंग फहद अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (सऊदी अरब))
सबसे बड़ी जलसंधि	टार्टार जलसंधि
सबसे बड़ा सड़क पुल	महात्मा गाँधी सेतु (भारत)
सबसे बड़ा पठार	तिब्बत का पठार
सबसे बड़ा ग्रह	बृहस्पति गृह
सबसे बड़ा उपसागर	हडसन उप सागर
सबसे बड़ा व भारी जानवर	ब्लू ह्वेल
सबसे बड़ा दिन उत्तरी गोलार्द्ध में	21 जून
सबसे बड़ा ज्वालामुखी	मोनालिया (हवाई द्वीप)
सबसे बड़ी मूंगे की चट्टान	ग्रेट बेरियर रीफ (ऑस्ट्रेलिया)
सबसे बड़ा जलप्रपात	ग्वायरा (एल्टो पराना नदी)
सबसे बड़ा जलडमरूमध्य	डेविस जलडमरूमध्य
सबसे बड़ा सागर	दक्षिणी चीन सागर
सबसे बड़ा लैगून	लैंगोआ डॉस पैंटोस (ब्राजील)
सबसे बड़ा घंटाघर	द ग्रेट बेल ऑफ मॉस्को
सबसे बड़ा पुस्तकालय	कांग्रेस पुस्तकालय (लंदन)
सबसे ऊँची मस्जिद	सुल्तान हसन मस्जिद, काहिरा (मिस्र)
सबसे बड़ी मस्जिद	जामा मस्जिद (भारत)
सबसे बड़ा राजमार्ग	राजमार्ग 1 (ऑस्ट्रेलिया) लम्बाई-14500 किमी.
सबसे ऊँचा पठार	पामीर का पठार (तिब्बत)
सबसे ऊँचा झरना	एंजिल (वेनेजुएला)
सबसे अधिक गहराई में स्थित पहाड़ी	बुकिट टामसन (ब्रुनेई)
सबसे अधिक वर्षा का स्थान	मॉसिनराम (भारत)
सबसे अधिक ठण्डा प्रदेश	बर्खोयांनस्क (रूस)

			पद्धतियों के विकास, उपयोग या पर्यावरणीय समस्या का हल निकालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।
राजीव गाँधी पर्यावरण पुरस्कार (₹2 लाख + ट्रॉफी + प्रशस्ति-पत्र)	1993	पर्यावरण मन्त्रालय	स्वच्छ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान पर औद्योगिक संस्थानों द्वारा स्वच्छ प्रौद्योगिकी को अपनाने पर
राजीव गाँधी वन्यजीव संरक्षण अवार्ड (₹ 1 लाख + प्रशस्ति -पत्र)	1998	पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय	वन्यजीव संरक्षण में योगदान देने वाले व्यक्ति या संस्था को
मेदिनी पुरस्कार (₹ 15000 से 31000)	2007	पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय	पर्यावरण एवं इससे जुड़े विभिन्न विषयों; जैसे- वन, वन्यजीव, प्रदूषण, जल संसाधन आदि पर हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन पर दिया जाता है
अमृता देवी बिश्नोई वन्यजीव सुरक्षा पुरस्कार (₹। लाख)	-	राजस्थान सरकार का वन्य विभाग	वन्य जीव सुरक्षा हेतु कार्य करने वाले

INFUSION NOTES

- **विश्व के प्रमुख संगठन और उनके मुख्यालय** –

क्रमांक	विश्व के प्रमुख संगठन	मुख्यालय
1.	अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)	वियना, ऑस्ट्रिया
2.	अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)	वाशिंगटन डी. सी., अमेरिका
3.	अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय	हेग, नीदरलैंड
4.	अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)	जेनेवा, स्विट्जरलैंड
5.	आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD)	पेरिस, फ्रांस
6.	अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति (IOC)	लुसाने, स्विट्जरलैंड

7.	अफ्रीकी आर्थिक आयोग (ECA)	आदिस – अबाबा, इथोपिया
8.	अफ्रीकी एकता संगठन (OAU)	आदिस – अबाबा, इथोपिया
9.	अरब लीग	काहिरा, मिस्र
10.	अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)	हरियाणा, भारत
11.	उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन / नाटो (NATO)	ब्रुसेल्स, बेल्जियम
12.	दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संघ (ASEAN)	जकार्ता, इंडोनेशिया
13.	यूरोपियन परमाणु ऊर्जा समुदाय (EURATON)	ब्रुसेल्स, बेल्जियम
14.	यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC)	जेनेवा, स्विट्जरलैंड
15.	यूरोपियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाईजेशन (ESRO)	पेरिस, फ्रांस
16.	यूनेस्को (UNESCO)	पेरिस, फ्रांस
17.	यूनिसेफ (UNICEF)	न्यूयॉर्क, अमेरिका
18.	यूरोपीय कॉमन मार्केट (ECM)	जेनेवा, स्विट्जरलैंड
19.	यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ECTA)	जेनेवा, स्विट्जरलैंड
20.	यूरोपीय संसद	लक्ज़मबर्ग
21.	यूरोपीय ऊर्जा आयोग (EEC)	जेनेवा, स्विट्जरलैंड
22.	रेडक्रॉस	जेनेवा, स्विट्जरलैंड
23.	राष्ट्रमंडल (COMMONWEALTH)	लंदन, इंग्लैण्ड
24.	राष्ट्रमंडलीय राष्ट्राध्यक्ष सम्मेलन (CHOGM)	स्ट्रांसबर्ग

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof) ⬇

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

VDO Pre. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp – https://wa.link/6z7do2

Online order – https://cutt.ly/9NCBSnA